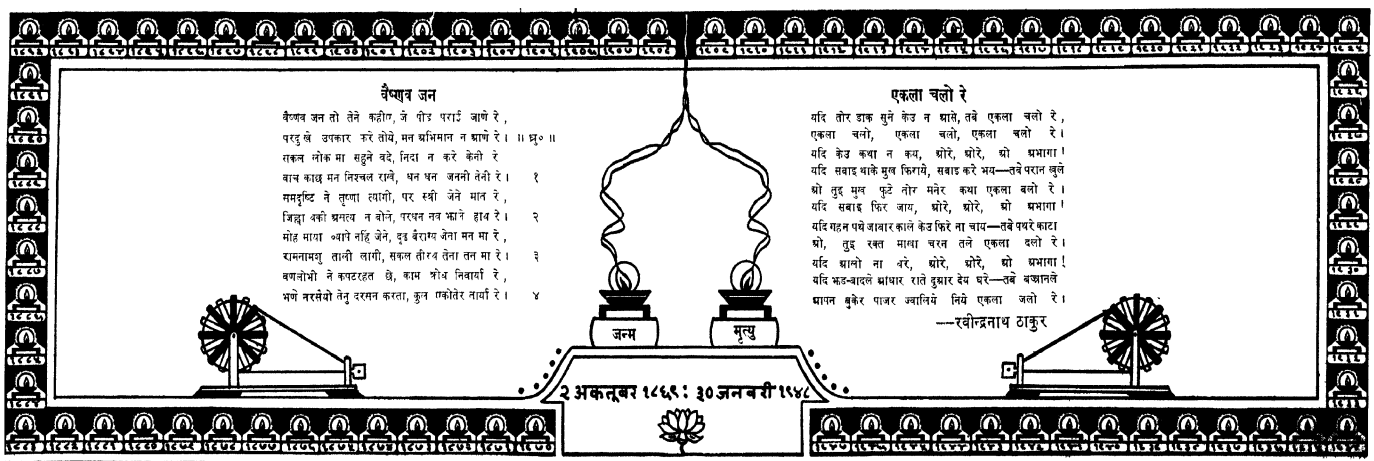
UNIVERSAL
LIBRARY
OU_178326
UNIVERSAL
LIBRARY


वैष्णव जन
वैष्णव जन तो तेने कहीए, जे पीड पराई जाणे रे,
परदु खे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे। ॥ ध्रु० ॥
सकल लोक मा सहुने वदे, निंदा न करे केनी रे
वाच काछ मन निश्चल राखे, धन धन जननी तेनी रे। १
समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, पर स्त्री जेने मात रे,
जिह्वा थकी असत्य न बोले, परधन नव झाले हाथ रे। २
मोह माया व्यापे नहिं जेने, दृढ वैराग्य जेना मन मा रे,
रामनामशु ताली लागी, सकल तीरथ तेना तन मा रे। ३
वणलोभी ने कपटरहित छे, काम क्रोध निवार्या रे,
भणे नरसैयो तेनु दरसन करता, कुल एकोतेर तार्या रे। ४
एकला चलो रे
यदि तोर डाक सुने केउ न आसे, तबे एकला चलो रे,
एकला चलो, एकला चलो, एकला चलो रे।
यदि केउ कथा न कय, ओरे, ओरे, ओ अभागा!
यदि सबाइ थाके मुख फिराये, सबाइ करे भय—तबे परान खुले
ओ तुइ मुख फुटे तोर मनेर कथा एकला बलो रे।
यदि सबाइ फिर जाय, ओरे, ओरे, ओ अभागा!
यदि गहन पथे जाबार काले केउ फिरे ना चाय—तबे पथेर काटा
ओ, तुइ रक्त माखा चरन तले एकला दलो रे।
यदि आलो ना धरे, ओरे, ओरे, ओ अभागा!
यदि झड-बादले आधार राते दुआर देय घरे—तबे बज्रानले
आपन बुकेर पाजर ज्वालिये निये एकला जलो रे।
—रवीन्द्रनाथ ठाकुर
जन्म
मृत्यु
२ अक्तूबर १८६९ : ३० जनवरी १९४८

गांधी, मो. क.

बापू के आशीर्वाद १९६४

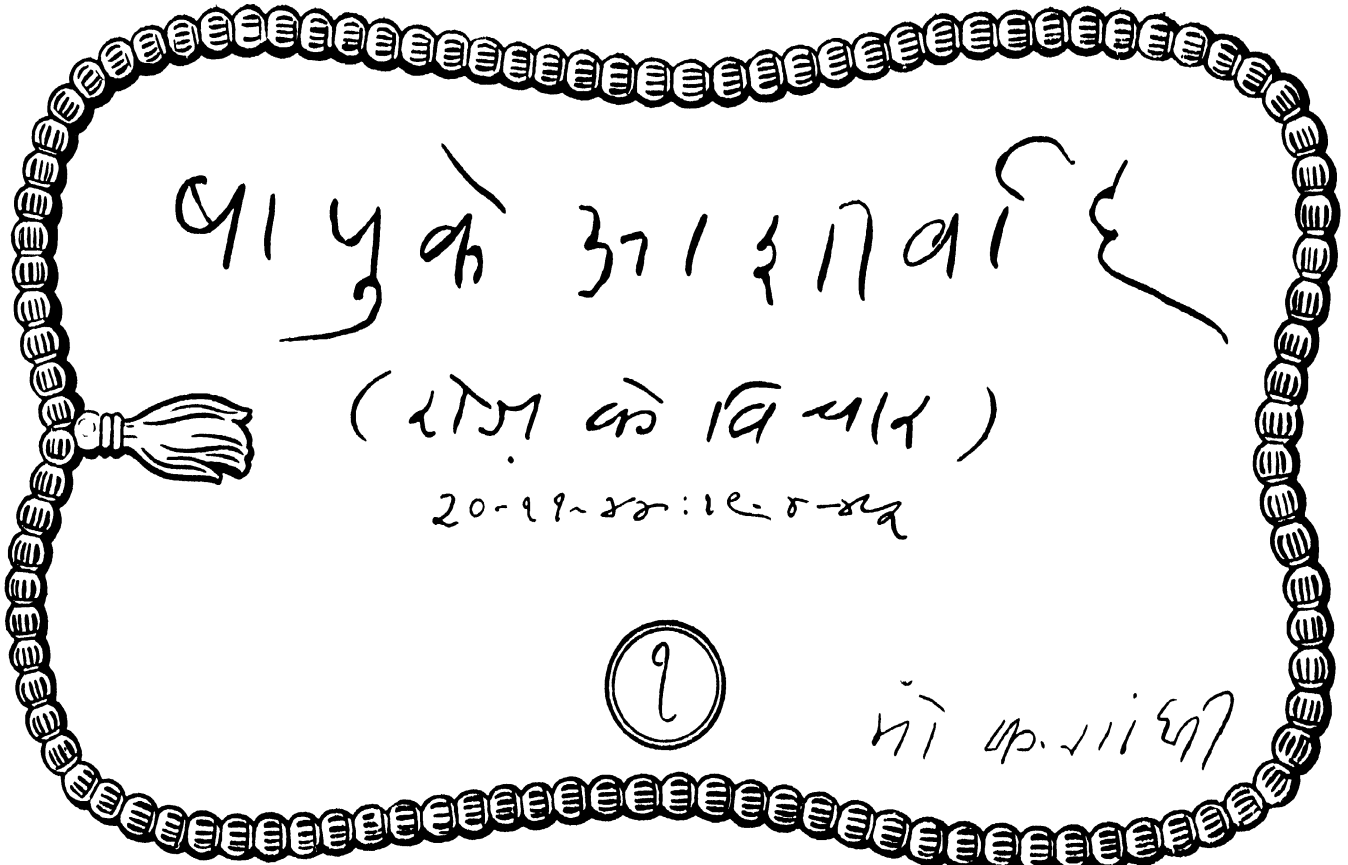
**OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY**

Call No. H920 Gr19B Accession No. G.H.3135

Author गांधी, मो. क

Title बापू के आशीर्वाद १९६४

This book should be returned on or before the date last marked below.



प्रकाशक
आनंद हिंगोरानी
संपादक–प्रकाशक : "गांधी सीरीज"
७ एडमान्स्टन रोड, इलाहाबाद

●

सर्वाधिकार सुरक्षित
नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, की अनुमति से )

●

पहला संस्करण : २ अक्तूबर १९४८
दूसरा संस्करण : १८ मार्च १९६४

●

मूल्य : रु० १५.००

●

मुद्रक
बी० पी० ठाकुर
लीडर प्रेस, इलाहाबाद

विद्या को

# दो शब्द

एक पवित्र आत्मा की स्मृति में और एक बिछुड़ी हुई आत्मा के संतोष के लिये बापू ने यह "रोज़ के विचार" लिखने आरंभ किये। दोनों की बापू बहुत क़द्र करते थे। अपने "रोज़ के विचार" लिखने के क्रम को उन्होंने बिरले ही तोड़ा।

विद्या ( जिसकी स्मृति में यह विचार लिखे गये हैं ) की जन्मपत्री में उसे "ऋषिकन्या" के नाम से ही संबोधन किया गया था। बापू उसे बड़ी साध्वी मानते थे। मुझे अपने जीवन में ऐसी आत्माओं का परिचय शायद ही हुआ हो।

मुझे खेद है कि विद्या के पवित्र जीवन से हम पूरा लाभ न उठा सके। परन्तु उसकी स्मृति में बापू के लिखे हुए यह "रोज़ के विचार" भी शिक्षा के सागर हैं। कैसा अच्छा हो यदि इस सागर में से मोती चुन कर हम अपना जीवन सफल करें!

१ यार्क प्लेस, नई दिल्ली
२० अगस्त, १९४८

जेरामदास दौलतराम

# भूमिका

२० जुलाई, १९४३ को मेरी धर्मपत्नी विद्या की अकाल मृत्यु होने पर मैं स्वभावतः बहुत उदास रहता था। एक बापू ही थे जो मेरे दुखी मन को आश्वासन दे सकते थे। लेकिन वह उस समय आग़ाख़ां महल, पूना में नज़रबन्द थे। जब बापू ६ मई, १९४४ को छूटे तब मेरा उनके साथ कुछ पत्र-व्यवहार चला। यद्यपि वह कहते थे कि ईश्वर ही हमारा निरंतर साथी है तो भी मैं अपने को अकेला और उदास समझता रहा। २ जून, १९४४ वाले एक पत्र में उन्होंने लिखा :

"तुम्हें अब शोक करना छोड़ देना चाहिये। जो कुछ तुमने पढ़ा और पचाया है, उस सब से सहारा लो। एक सच्चा विचार भेजता हूँ जो कि मुझे एक बहन ने भेजा है। उसे अंतर में उतार लो। विद्या मरी नहीं है। वह तो अपना शरीर, जिसमें वह निवास करती थी, यहाँ छोड़कर चली गई है, और उसने अपने योग्य दूसरा शरीर धारण कर लिया है।"

और इस ख़त के साथ-साथ बापू ने अंग्रेज़ी में छपा हुआ वह 'सच्चा विचार' भी भेज दिया था जो कि उन्हें पूज्य कस्तूरबा की मृत्यु पर एक पश्चिमी महिला, श्रीमती ग्लेन० ई० स्नाईडर, ने ग्राईम्स (अमेरिका) से आश्वासन देने के लिये भेजा था :

"यह ठीक नहीं, ऐसा मत कहो
कि वह मर गई है। वह सिर्फ़ हमसे दूर चली गई है !
प्रसन्नतापूर्वक मुसकान के साथ,
विदाई का संकेत करते हुए
वह एक अनजाने देश में चली गई है,
और हमें यह कल्पना करते हुए छोड़ गई है
कि कितना सुंदर वह देश होगा जहाँ उसने बसना पसन्द किया है !
यह समझो कि उसे वहाँ भी वैसा ही प्रेम प्राप्त है
जैसा कि उसे यहाँ प्राप्त था;
यह समझो कि वह अब भी वैसी ही है, और कहो—
वह मरी नहीं, सिर्फ़ हमसे दूर चली गई है !"

फिर २० जून, १९४४ को एक पत्र में बापू ने लिखा :

"विद्या की मृत्यु पर तुम हर समय विचार न किया करो और न विचलित ही हो। यदि ज़िंदा रहते हुए वह तुम्हारे जीवन में प्रेरणा देती थी, तो अब, जब कि वह अपने विश्रामघर गई है, और भी अधिक

प्रेरणा तुमको उससे मिलनी चाहिये। मेरी समझ में तो आत्माओं के सच्चे ऐक्य का यही अर्थ है। इसका अत्युत्तम उदाहरण ईसा का है, और आधुनिक काल में रामकृष्ण परमहंस का। मरने के बाद वे और भी प्रभावशाली बने। उनकी आत्मा कभी मरी नहीं और ऐसे ही विद्या की भी आत्मा नहीं मरी है। इसलिये तुम्हें शोक करना अवश्य छोड़ देना चाहिये, और सामने आनेवाले कर्त्तव्य का ही विचार करना चाहिये।"

फिर १९ जुलाई, १९४४ को एक पत्र में उन्होंने लिखा :

"विद्या बड़ी साध्वी थी। उसका हृदय सुनहरी था। उसकी त्याग की इच्छा बड़ी थी। उसका प्रेम समुद्र-सा था। तुमको उसके लायक़ बनना है।"

इस प्रकार पत्र-व्यवहार द्वारा बापू मुझे शांति-पाठ सिखाते रहे। जब ३० सितंबर, १९४४ को वह सेवाग्राम आश्रम गये तो मैं भी वहाँ पहुँच गया। वहाँ रोज़ प्रातःकाल की प्रार्थना के बाद मैं बापू के पास जाकर अपने मन का बोझ हलका करता था। बापू करुणा के सागर थे। वह इतने अधिक कार्यव्यस्त होते हुए भी हर रोज समय निकालकर न केवल मुझे धैर्य देते बल्कि कुछ न कुछ उपदेश लिख भी देते थे, ताकि मैं उसपर विचार करके अपने मन पर क़ाबू पाने का प्रयत्न करूँ। १३ अक्टूबर, १९४४ से १५ दिन तक बापू लगातार ऐसे ही लिखते रहे और उसके बाद कभी कभी। भूमिका में ये सब विचार देना काफ़ी कठिन है, अतः सिर्फ़ कुछ दिनों के ही विचार यहाँ दिये जाते हैं :

"जो सिर्फ़ ईश्वर का सहारा लेते हैं, वे मनुष्य का सहारा नहीं लेंगे, चाहे वे मरे हों चाहे ज़िंदा। यदि तुमने इसे पचा लिया, तो तुम कभी शोक नहीं करोगे।"

१३-१०-४४

"तुम 'ट्राइ अगेन' ( 'फिर से कोशिश करो' ) वाली कविता जानते हो ? दुःख से लाचार बनने की तुमको इजाज़त नहीं है। दूसरा सब भरोसा निकम्मा है, एक ईश्वर पर ही विश्वास रखो। विद्या की मौत से यही शिक्षा मिलती है। तुम्हारे प्रेम की परीक्षा हो रही है।"

१४-१०-४४

"ईश्वर की कृपा ईश्वर का काम करने से आती है। तुमको ईश्वर का काम करना है। कभी चरखा चलाता है ? चरखा चलाना सब से बड़ा यज्ञ है। रोते रोते भी चरखा चलाओ।"

१५-१०-४४

"शांति में, सुख में तो सबकुछ होता है। चरखा दुःखी का, भूखों का सहारा है। दुःख में तो छूटना ही नहीं चाहिये।"

१६-१०-४४

"तुम्हें अपनी दिनचर्या ऐसी बना लेनी चाहिये कि एक क्षण भी फ़ुरसत न मिले। यही मृत प्रियजनों

के प्रति सच्चा प्रेम है। अंग्रेज़ों को देखो। वे भी अपने प्रियजनों को प्यार करते हैं, लेकिन जब वे प्रियजनों से जुदा होते हैं तो और भी अधिक अपने को सेवाकार्य में समर्पण कर देते हैं।"

१७-१०-४४

"मुए ज़िंदों को कुछ भेजते हैं, उसका हमें पता नहीं चलता है; लेकिन ज़िंदे मुओं को भेजते हैं, यह निःसंदेह है। इसलिये हम उनके पीछे कभी न रोयें।"

"ईश्वर-कृपा (Grace) ईश्वर का काम करने से आती है। ईश्वर के काम शरीर से, मन से, वाणी से, दुःखी की सेवा करने से होते हैं।"

१८-१०-४४

"ऐसा सोचो कि ग़रीब आदमी तुम्हारी हालत में क्या कर सकता है। उसकी पत्नी मर जाय, तो वह दुगुना काम करेगा। वह भी ईश्वर का भक्त है। भीतर का आनंद ईश्वर का काम करने से ही पैदा होता है। हम सब अपने को ग़रीब की हालत में रख दें। बहरेपन को ईश्वर की बख़्शीश समझो। एक क्षण भी बग़ैर काम के रहना ईश्वर की चोरी समझो। मैं दूसरा कोई रास्ता भीतरी या बाहरी आनंद का नहीं जानता हूँ।"

"सबसे अच्छा तरीक़ा तुम्हारे लिये २० ता० मनाने का तो यह है कि तुम सारा दिन सूत कातते रहो,

या अपनी रुचि के अनुसार आश्रम के कोई भी काम में लगे रहो, और उसके साथ रामनाम को जोड़ दो।"

"(ग़रीबों को खिलाना) बिलकुल ग़ैरज़रूरी है। जिन्हें सचमुच ज़रूरत हो, उन्हें तुम भले ही कुछ दे सकते हो।"

१९-१०-४४

"आज का दिन तुम्हारे लिये शुभ दिन है। विद्या को मैंने काफ़ी रुलाया था। वह तुम्हारे जैसे रो देती थी और कहती थी: 'भगवान बताओ'। मैंने उसे डाँटा और कहा: 'भगवान को चरखे में देखेगी।' आख़िर समझ गई।"

"हम यंत्र हैं और यांत्री भी। शरीर यंत्र है, आत्मा यांत्री। आज तुम्हें इस यंत्र से यंत्रवत् काम लेना है और मुझे हिसाब देना है।"

२०-१०-४४

"मनुष्य जिसका ध्यान करता है, उसके मारफ़त ईश्वर को निश्चित देखता है। चरखा सबसे अच्छा प्रतीक है, और उसका दृश्यफल भी है।"

"मनुष्य को मनुष्य का सहारा चाहिये, इसलिये तो आश्रम वग़ैरा संस्थायें रहती हैं। मनुष्य का सहारा सान्निध्य से ही होता है, ऐसा नहीं है। कोई डाक द्वारा करते हैं, कोई सिर्फ़ विचार से, कोई मरे हुए

के सद्वचनों से, जैसे हम तुलसीदास से रोज़ मिलते हैं।"

२१-१०-४४

"आशा अमर है। उसकी आराधना कभी निष्फल नहीं होती।"

२२-१०-४४

"मेरे पास बैठने में कोई हानि नहीं है, लेकिन ऐसे वक़्त पर, जैसे महादेव करता था और कृपालाणी, तकली चलाना। पीछे ईश्वर के समय की चोरी नहीं होगी। तकली हमारा मूक मित्र है। कुछ आवाज़ ही नहीं करती, और जगत के लिये जो धागा चाहिये उसे निकालती रहती है। तकली चलाते समय हम सबकुछ देख सकते हैं और सुन सकते हैं। मैं तो यहाँ तक जाता हूँ कि ईश्वर-कृपा होगी तो इस तरह कर्म में जुते हुए रहने से कान भी खुल जाय। लेकिन जब इस तरह कर्मयोगी बनोगे, तब कान की परवाह थोड़ी रहेगी। वानर-गुरु तो जान-बूझ कर कान बंद करता है, योंकि आसपास की आवाज़ उसके रास्ते में रुकावट डालती है।"

२३-१०-४४

"मेरी शांति और मेरे विनोद का रहस्य है मेरी ईश्वर, यानी सत्य पर अचल श्रद्धा। मैं जानता हूँ कि मैं कुछ कर नहीं सकता हूँ। मुझ में ईश्वर है, वह मुझसे सबकुछ कराता है, तो मैं कैसे दुःखी हो सकता

हूँ ? यह भी जानता हूँ कि जो कुछ मुझसे कराता है, मेरे भले के ही लिये है। इस ज्ञान से भी मुझे खुश रहना चाहिये। 'बा' को ईश्वर ले गया सो 'बा' के भले के लिये। इसलिये 'बा' का वियोग मुझे दुःख देने वाला नहीं होना चाहिये। इस वास्ते विद्या की मृत्यु से तुम्हारा दुःख मानना पाप समझो।"

२४-१०-४४

"शारीरिक काम ज्यादा करो। पढ़ने का, पढ़ाने का अवश्य करो, लेकिन तकली, चरखा पर खूब काम करो। भाजी साफ़ करो, आश्रम के काम में हिस्सा लो और सब काम करने में ईश्वर के दर्शन करो, क्योंकि ईश्वर सब में भरा है।"

२५-१०-४४

"मेरे लेखों में से जो निकालना है सो निकालो। यह काम अच्छा है। लेकिन शारीरिक परिश्रम खूब उठाना चाहिये। विद्या का स्मरण करना और रोना बहुत हानिकर है। वह स्मरण अच्छा है जो आत्मा को ऊँचे चढ़ाता है, जागृत करता है। आत्मा का स्वरूप सत् (सत्य), चित् (ज्ञान हृदय से मिला हुआ, अनुभवसिद्ध) और आनंद है। आनंद में दोनों की परीक्षा है—आनंद भीतर का, जो बाहर में देखने में आता है।"

२८-१०-४४

"सब ईश्वर करता है और वह जो करता है वह अच्छे के ही लिये है, ऐसा समझ कर आनंद में रहो।" १३-११-४४

"रोना हंसना दिल में से निकलता है। (मनुष्य) दुःख मान कर रोता है। उसी दुःख को सुख मान कर हंसता है। इसलिये ही रामनाम का सहारा चाहिये। सब उनको अर्पण करना तो आनंद ही आनंद है।"

१६-११-४४

इस प्रकार बापू से मुझे रोज़ बराबर दो महीने तक प्रबोध मिलता रहा। बाद में जब उन्होंने मुझे क़ुदरती इलाज के लिये प्राकृतिक आश्रम, भीमावरम्, भेजने का निर्णय किया तब मेरे मन में एक विचार उठा कि कैसा अच्छा हो यदि बापू मेरे लिये हर रोज़ कुछ न कुछ वैसे ही लिखते रहें। बापू के सामने जब मैंने यह बात रखी तो उन्होंने आख़िर स्वीकार कर ली और इस प्रकार बापू के ये "रोज़ के विचार" लिखना आरंभ हुए।

बापू से फिर मेरा मिलना पूना में जून १९४६ में हुआ। जब मैंने उनसे इन विचारों को छपवाने की आज्ञा माँगी तो उन्होंने कहा: "इनमें धरा ही क्या है, जो तुम छपवाना चाहते हो? यदि छपवाना ही है तो मेरे मरने के बाद छपवाना। अभी क्या जल्दी है? कौन जानता है कि जो कुछ मैं आज लिख रहा हूँ,

उसपर मैं आखिर दम तक टिक सकूंगा। यदि टिक सका तब तो छपवाना ठीक होगा, नहीं तो नहीं।"

बापू ने लिखने का यह सिलसिला लगभग २ साल तक जारी रखा, और अंत में जब नवाखाली की दुर्घटनाओं के कारण उनका मन अति उद्विग्न हो गया और इसी कारण उन्होंने 'हरिजन' के लिये लिखना तथा अन्य पत्र-व्यवहार करना वग़ैरह छोड़ दिया और अपना मन केवल देश की स्थिति सुधारने में लगाया, तब उसी समय से उन्होंने विचार लिखना भी बंद कर दिया।

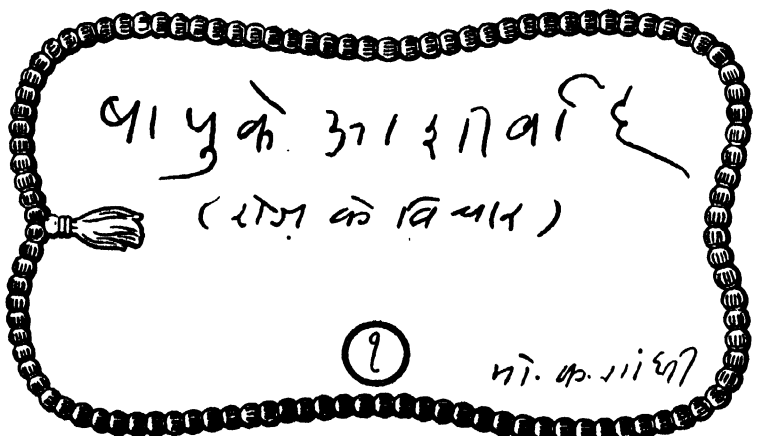
इन विचारों की जो अपनी सुगंधि है, वह सदा के लिये बापू की याद को जागृत रखनेवाली है। यह 'विचार' एक ऐसे व्यक्ति के हैं, जिसने अपने जीवन में बराबर उन पर अमल करने का प्रयत्न किया है। बापू के जीवन भर की अमर साधना इनके पीछे है। इस कारण इन विचारों का मूल्य हमारे अंकन से परे हो जाता है।

जहाँ तक मेरा सवाल है, यह 'विचार' मुझे सदा सदा सत्प्रेरणा देते रहेंगे। और यदि मैं अपने जीवन में इन पर कुछ अंशों में भी चल सका, तो अपना अहोभाग्य मानूंगा। इन्हें अपने ही लिये सुरक्षित रखना मेरे लिये एक तरह की कृपणता होगी। यदि मुझ जैसे दूसरे राहियों को इनसे कुछ सांत्वना मिल सके, तो यह मेरे लिये परम संतोष की बात होगी।

पुस्तक का शीर्षक चुनने का स्पष्ट कारण है। बापू के इन विचारों को मैं अपने लिये आशीर्वाद के रूप में मानता हूँ। मुझे तनिक भी संदेह नहीं है कि औरों के लिये भी यह ऐसे ही सिद्ध होंगे।

७ एडमान्स्टन रोड, इलाहाबाद
१८ मार्च, १९६४

आनंद हिंगोरानी


बापुके आशीर्वाद
(राज्य के विधान)
1
मो. क. गांधी

ईश्वरके नाम तो अनेक हैं
लेकिन
एक ही नाम कहें तो वह है सत्, सत्य.
इसलिये
सत्य ही ईश्वर है.

20-11-38

ईश्वर के नाम तो अनेक हैं
लेकिन एक ही नाम ढूढ़ें
तो वह है सत्, सत्य।
इस लिये सत्य ही
ईश्वर है।

२०-११-४४

સત્યકે દ્વારા અહિંસાકે
હા હી ના હી કહતે.
દોનોકા કહના હૈ કિ
અહિંસા પરમોધર્મ:

२१-११-४५

सत्य के दर्शन बग़ैर अहिंसा के हो
ही नहीं सकते । इसी लिये कहा है
कि अहिंसा परमोधर्मः ।

२१-११-४४

सत्यकी शांति और अहिंसा का पालन
ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह, अभय, सर्वधर्म
समानत्व, अस्पृश्यता निवारण इ. व्रतोंके हो
नहीं सकता.

22-12-47

सत्य की शोध और अहिंसा का पालन
ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह, अभय, सर्वधर्म
समानत्व, अस्पृश्यता निवारण इत्यादि
बग़ैर हो नहीं सकता।

२२-११-४४

પ્રભુ મારી કરો ઓર મારું મનડું,
ગાવા, ઓ મારા ! દિવસ ચિંતવું.
ગો સ્વીકારજો નહીં કરતા હું ઓ
મારી વિકારોમાં દેતા દુઃખ
દયા પ્રભુ મારી ન માગજો.

23-12-88

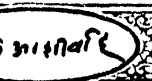




ब्रह्मचर्य का अर्थ यहां मनसा, वाचा, कर्मणा इंद्रिय निग्रह है। जो स्त्री गमन नहीं करता हूआ मन से विकारमय रहता है, वह सच्चा ब्रह्मचारी न माना जाय।

२३-११-४४





अवसरका आर्थ चोरी नहीं करना
दुलवाही न हीं करें. गाय बछडुकी हत्या
आवश्यकता नहीं है पर दूध देखना, खेती
करनी है. चारी में हिंसा तो अवश्य है.

28-29-[illegible]

अस्तेय का अर्थ चोरी नहीं करना इतना
ही नहीं है। जो वस्तु की हमें आवश्यकता
नहीं है उसे रखना, लेना भी चोरी है।
चोरी में हिंसा तो भरी है।

२४-११-४४

आपश्री का पत्र मिला है। मेरे
हाथ को कोई नई चीज का संग्रह न करें
सिर्फ की हुई आज्ञा का पालन करें।

२५-१२-७७

अपरिग्रह से मतलब यह है कि हम कोई
चीज़ का संग्रह न करें जिसकी हमें आज
दरकार नहीं है ।

२५-११-४४



आज मैं सब प्रकार के दुःखों से मुक्त हुआ हूँ. मेरी आँखों से, मेरी नाक से, मेरे मुख से, मेरे शरीर से, मेरे पैरों से, मेरे हाथों से, मेरे पूरे शरीर से दुःख की सारी शक्ति, आज मुक्त हुई है.

२६-६-४७

अभय में सब प्रकार के डर का अभाव होना चाहिये। मोत का डर, मारपीट का डर, भूख का डर, अपमान का डर, लोक-लाज का डर, भूत प्रेत का डर, किसी के क्रोध का डर—इन सब और ऐसे डरों से मुक्ति, अभय है।

२६-११-४४

मेरे हृदय आपके धर्म का आदर होते हैं
और ही दूसरे धर्म का है - नाम महत्व
पर मिला ही है

२७-११-४४

जैसे हम अपने धर्म को आदर देते हैं
ऐसे ही दूसरे धर्म को दें—मात्र सहिष्णुता
पर्याप्त नहीं है ।

२७-११-४४

अप्रसन्नता निवारणके मानी दरिद्रनारायणकी पूजा इतनाही नहीं लेकिन उनको हमारे दिलमें हमारे जैसे मानवता अमृत जैसे हमारे माइबिहनोंकी दर्दमें हुँ इसे उनकी दर्दमा।
मकोई हुं यहैंन कोई नी च.

२८-११-४४

अस्पृश्यता निवारण के मानी हरिजनों को छूना इतना ही नहीं, लेकिन उनको हमारे रिश्तेदारों जैसे समझना अर्थात् जैसे हमारे भाई बहनों से वर्तते हैं ऐसे ही उनसे वर्तना । न कोई ऊंच है, न कोई नीच ।

२८-११-४४

योगश्चित्तवृत्ति निरोधः

यह पातंजल योगदर्शनका पहला सूत्र है.
योग चित्तवृत्तिका निरोध है, यानि हमारे हृदयमें
उठते तरंगों पर अंकुश रखना, उसे दबा देना।
यह योग हुआ।

२९-११-४४

*योगश्चित्तवृत्तिनिरोध :*

यह पातंजल योग दर्शन का पहला सूत्र है। योग चित्तवृत्ति का निरोध है, यानी हमारे दिल में उठते तरंगों पर अंकुश रखना, उसे दबा देना, यह योग हूआ।

२९-११-४४

जिस के चित्त में तरंगे उठती ही रहती है।
वह सत्य के दर्शन कैसे कर सकता है।
चित्त में तरंगो का उठना मनुष्य के नुकसान
होता है। नुकसान मे जो वस्तु का नही नुकसान
पर कार्य दर्शन कर सकता है वह सत्य को
देख सकता है। ऐसे ही चित्त की अशांति में
भगवान नाम का आश्रय लेकर ही
गीता गाता है।

30-11-47

जिस के चित्त में तरंग उठते ही रहते हैं वह सत्य के दर्शन कैसे कर सकता है। चित्त में तरंग का उठना समुद्र के तुफ़ान जैसा है। तुफ़ान में जो सुकानी सुकान पर काबू रख सकता है वह सलामत रहता है। ऐसे ही चित्त की अशांति में जो रामनाम का आश्रय लेता है वह ज़ीत जाता है।

३०-११-४४

"बृहत् की भावना" मानव मात्र कल्याण चाहती है. वह तपता है और इसको हरितमा चाहिए है. इस कथा करते हैं?

१-१२-८४

"वृक्षन् की मत ले"[1] भजन मनन करने योग्य है। वह तपता है और हमको शीतलता देता है। हम क्या कस्ते हैं ?

१-१२-४४

[1]देखिये परिशिष्ट नं० १।

मिथ्याज्ञान को हम हमेशा छोड़ते हैं.
मिथ्याज्ञान के जो हमको सत्य को
दूर रखना है या करना है.

2-12-84

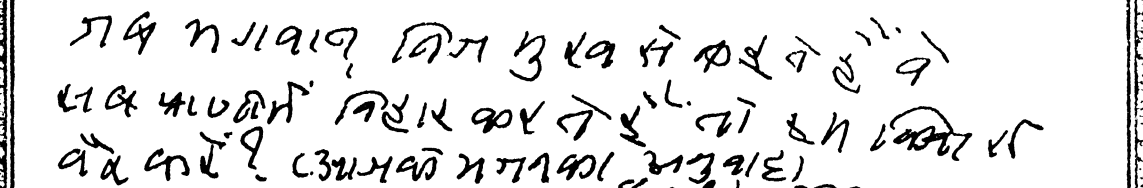
मिथ्या ज्ञान से हम हमेशा डरते रहें।
मिथ्या ज्ञान वह है जो हमको सत्य से दूर
रखता है या करता है।

२-१२-४४

सत्यको इश्वरी को छि ये सांचो
परि पढा आँखे छकवा मनमा थ्यो
आनन्द थ्यो हर्ष
३-१२-२२

सत्य के दर्शन के लिये संतों का
चरित पढ़ना और उसका मनन
करना आवश्यक है ।

३-१२-४४



जब भगवान् निज मुख से कहते हैं वे सब प्राणी में विहार करते हैं तो हम किस से वैर करें ? (आज के भजन का अनुवाद)[1]

४-१२-४४

[1]देखिये परिशिष्ट नं० २।

મીરાબાઈકો જીવનમેં હમ બડી બાત યહ
દેખતે હૈં કિ ઉનકા ભગવાનકો કિતને
અપના બના કુછ છોડા-પતિ આ.

૫-૧૨-૪૪

मीराबाई के जीवन से हम बड़ी बात
यह सीखते हैं कि उसने भगवान् के लिये
अपना सब कुछ छोड़ा—पति भी।

५-१२-४४

કોણ કોની મનુષ્ય કહ્યા નહીં કરી શકતા?
રાવણ કુળ કરી શકતા હું.

६-१२-४४

श्रद्धा से मनुष्य क्या नहीं कर सकता ?
सबकुछ कर सकता है ।

६-१२-४४

मधुमति मनुष्य पहाड़ों को उजड़ा कर रहा है।
7-12-84

श्रद्धा से मनुष्य पहाड़ों को उलंघन
करता है।

७-१२-४४

ગો મનુષ્ય કિસી એક ચીજ પર એક નિશ્ચયી
કાર્ય કરતા હૈ વહ હી કિસી દૂસરી ચીજ કો નહીં
દેખકર હી કામ કરેગા.

८-२२-२४

जो मनुष्य किसी एक चीज़ पर एकनिष्ठा
से काम करता है वह आख़ीर सब चीज़
करने की शक्ति हासल करेगा ।

८-१२-४४

सच्चा सुख बाहर नहीं मिलता है
अंदर ही मिलता है.

९-१२-२२

सच्चा सुख बाहर से नहीं मिलता है,
अंतर से ही मिलता है ।

९-१२-४४

જિસને ચલનાકા દિયા ઉસને દિયા.

१०-१२-५५

जिसने अपनापन खोया उसने सब
खोया ।

१०-१२-४४

सीधा रास्ता जैसा सरल है वैसा ही
कठिन है. ऐसा न होता तो सब सीधा
रास्ता ही लेते.

११-१२-४४

सीधा रास्ता जैसा सरल है ऐसा ही कठिन है। ऐसा न होता तो सब सीधा रास्ता ही लेते।

११-१२-४४

"हमारा धर्मका मूल है" ऐसा तुलसीदासजीने
कहा है उसके पहले है "तुलसीदास हमारा छोड़ी
सब आशा धर्म धारण" हमारा धर्म हमको विश्वास
बोहरे हमारा करें, उसके बिगड़े घर?

22-22-48

"दया धरम का मूल है"—ऐसा तुलसीदासजी ने कहा है और कहते हैं : "तुलसी दया न छांड़ीये जब लग घट में प्रान।" हम सब दया के भिक्षुक कैसे दया करें, और किस पर ?

१२-१२-४४

इस बहन ने कहा "मैं माफी मांगती थी
उसके हाथ में "मैं तुम्हें कैसे माफ करूं"
उसने कहा "क्यों कि मैं तुम्हें माफ नहीं
करती तो कैसे हैं तो फिर मांगना छोड़ो माफी
क्यों चाहिए!

१३-१२-२४

एक बहन ने कहा : "मैं प्रार्थना करती थी, अब छोड़ दी है।" मैंने पूछा : "क्यों ?" उसने उत्तर दिया : "क्योंकि मैं दिल को धोका देती थी।" उत्तर तो ठीक ही है लेकिन धोका देना छोड़े, प्रार्थना क्यों छोड़े ?

१३-१२-४४

[illegible]

कल का भजन बहुत मीठा और मननीय था। उसका सार यह है। भगवान् न मंदिर में है, न मस्जीद में; न भीतर है न बाहर; कहीं है तो दीन जनों की भूख और प्यास में है। चलो, हम उनकी भूख और प्यास मिटाने के लिये नित्य कातें या ऐसी जात मेहनत उनके निमित्त रामनाम लेकर करें।

१४-१२-४४

कभी बात है कि हम सामान्यतया भी सहमत नहीं
होते तभी वह झगड़ा या युद्ध को मोड़ कैसे बढ़ते.
कभी आपको यह लगा होगा कि हम सोचते
घोषणा करें या आपस में निर्णय करना
उचित दिशा में है कैसा भी करें.

२५-१२-४४

क्या बात है कि हम सामान्यतया भी झूठ से नहीं बचते भले वह शर्म या डर के मारे क्यों न हो। क्या अच्छा यह नहीं होगा कि हम मौन ही धारण करें या आपस २ में निडर होकर जैसा हमारे दिल में है वैसा ही कहें ?

१५-१२-४४

પાડ઼ાકા કરવી મનુષ્યકા ગાડ઼ા ચલતા હૈ।
ગૌરેદુધકો પેવ વૃદ્ધ કાકુર મી.

૨૬-૧૨-૪૪

थोड़ा सा झूठ भी मनुष्य का
नाश करता है जैसे दूध को एक
बूंद ज़हर भी ।

१६-१२-४४

सही पीड़ाको पीछे व्यक्त करना हमको
खटकता है, किसीको पीछे दुखद
हुआ है और दुःखी होते हैं।।

१७-१२-४४

सही चीज़ के पीछे वक्त देना हमको
खटकता है, निक्कमी के पीछे ख़्वार होते
हैं और ख़ुश होते हैं !!!

१७-१२-४४

"आदमको दुःख न करके हो, आदमी
दुःखोंसे लोकर दुःखके मूल से
आदमी मुक्त होवे."

१८-१२-४४

"आदम को खुदा मत कहो, आदम खुदा
नहीं; लेकिन खुदा के नूर से आदम जुदा
नहीं ।"

१८-१२-४४

संतोंकी वाणी सुनो, शास्त्रमर्यादा विधान
हो तो, अकिंचन अपने हृदयको टटोलने में
संकोच नहीं किया तो कुछ नहीं किया.
१९-२-४४

संतों की वाणी सुनो, शास्त्र पढ़ो, विद्वान्
हो लो, लेकिन अगर ईश्वर को हृदय में
स्थान नहीं दिया तो कुछ नहीं किया।

१९-१२-४४

मुझे तो हम सबसे राम चाहते हैं लेकिन
उसका अर्थ ठीक से हम समझ नहीं पाते हैं.
इस अर्थ तो यह है कि सब मनुष्यों से मुहब्बत
करो.

20-12-47

मुक्ति तो हम सब चाहते हैं, लेकिन उसका
अर्थ ठीक २ हम शायद नहीं जानते हैं।
एक अर्थ तो यह है कि जन्म मरण से
छुटकारा पाना ।

२०-१२-४४

मनकी शक्ति नामसे कहते हैं, इच्छा शक्ति तो
भुक्ति न मांगो, मांग सत्यको सत्य आचरणसे।
इस दृष्टिसे हरेक ति भुक्ति मुक्ति आदि पड़ा है।
22-12-47

भक्त-कवि नरसैंयो कहते हैं : "हरि ना
जन तो मुक्ति न मांगे, मांगे जनमोजनम
अवतार रे।" इस दृष्टि से देखें तो 'मुक्ति'
कुछ और रूप लेती है।

२१-१२-४४

आत्मा वस्तुतः परमात्मा ही है
और यही अर्थ इन ईशोपनिषद के पहले मंत्र
में पाते हैं।

22-12-47

अनासक्ति की पराकाष्टा गीता की मुक्ति
है और वही अर्थ हम ईशोपनिषत् के
पहले मंत्र में पाते हैं ।

२२-१२-४४

आनन्द कि कैसी बढ़े! सुख आँसे दुः ख, हंसी आँसे
दुआएं हमारा आँसे दूसरों का-सब दासा सम्पर्क
आनन्द कि बढ़ती है. इसलिये आनन्द का
Enrich with मन्त्र है.

23-12-88

अनासक्ति कैसे बढ़े ? सुख और दुःख, दोस्त और दुश्मन, हमारा और दूसरों का—सब समान समझने से अनासक्ति बढ़ती है। इसलिये अनासक्ति का दूसरा नाम समभाव है।

२३-१२-४४

जैसे बिंदु का समुदाय समद्र है, इसी तरह हम मैत्री करके मैत्री का सागर बन सकते हैं। और जगत् में सब एक दूसरों से मित्र भाव से रहें तो जगत् का रुप बदल जाय।

२४-१२-४४

आज खिचड़ी बना रही हूँ। इस तो सब धर्मों की
प्रार्थना गाते हैं उनको लिखे से ईसा मसीह का
नाम देखाई नहीं पड़ेगा। प्रार्थना बदलिये।

२५-१२-४४

आज क्रिसमस दिन है। हम जो सब धर्मों
की समानता मानते हैं, उनके लिये ईसा
मसीह का जन्म ऐसा ही माननीय है जैसा
राम कृष्णादि का ।

२५-१२-४४

बीमारी नाम मनुष्यको किसी दरदका
दान हो गई माहरी. बीमारी किसीभी दरेकको
दूखकर है. जिसका वर्णन मेरा शब्दोंमें वरसों है
उस बीमारी होती नहीं माहरी.

२५-१२-५२

बीमारी मात्र मनुष्य के लिये शर्म की बात होनी चाहिये। बीमारी किसी भी दोष की सूचक है। जिसका तन और मन सर्वथा स्वस्थ है, उसे बीमारी होनी नहीं चाहिये।

२६-१२-४४

विकारी विचारों की मात्रा को
घटाती हूँ इसलिये हर एक विकारी
विचार से अलग रहूँ।

२७-१२-४४

विकारी विचार भी बीमारी की निशानी है। इसलिये हम सब विकारी विचार से बचते रहें।

२७-१२-४४

विकारी विचारको वमनका एक अमोघ
उपाय - उलटी - है। नाम कंठस्थ होनी।
अंतःकरण निर्मल बनना चाहिये।

२८-१२-४४

विकारी विचार से बचने का एक अमोघ
उपाय—रामनाम—है। नाम कंठ से ही
नहीं, किंतु हृदय से निकलना चाहिये।

२८-१२-४४

व्याधि अनेक हैं, वैद्य अनेक हैं, उपचार भी अनेक हैं. अगर व्याधि को एकही दूर करें और उसको मिटाना हो तो वैद्य एकपर ही एकाग्र मन से विश्वास करना चाहिये. इस वचन में.

२९-१२-४४

व्याधि अनेक हैं, वैद्य अनेक हैं, उपचार
भी अनेक हैं। अगर व्याधि को एक ही
देखें और उसको मिटानेहारा वैद्य एक
राम ही है ऐसा समझें, तो बहुत सी
झंझटों से हम बच जाँय।

९-१२-४४

आदमी मरे वैद्य मरते हैं, डाक्टर मरते हैं. उनको
पीछे हम मरते हैं. लेकिन राम जो मरता नहीं है,
हमेशा जिंदा रहता है और आपका वैद्य है उसे हम
भूला जाते हैं.

३०-१२-४४

आश्चर्य है वैद्य मरते हैं, डाक्टर मरते हैं, उनके पीछे हम भटकते हैं। लेकिन राम जो मरता नहीं है, हमेशा ज़िंदा रहता है और अचूक वैद्य है उसे हम भूल जाते हैं।

३०-१२-४४

इस पत्र में मेरा आग्रह यह है कि हम जानते हैं कि हम भी मरने वाले तो हैं ही, चूंकि हम तो वैधानिक की हत्या नहीं चाहते हम अपने काम करते हैं और इस लिये हैं।

३१-१२-४४

इस से भी आश्चर्य यह है कि हम जानते
हैं कि हम भी मरने वाले तो हैं ही, बहुत
करें तो वैद्यादि की दवा से शायद हम
थोड़े दिन और काट सकते हैं और इस
लिये ख़्वार होते हैं।

३१-१२-४४

इसी तरह बूढ़े, बच्चे, जवान, धार्मिक, जातीय,
सबको नमते हुए पाते हैं तो भी संतोषसे
बैठना नहीं चाहते हैं; लेकिन थोड़े दिन
जीनेके लिये रामको छोड़ सब प्रयत्न करते हैं.

२-२-४५

इसी तरह बूढ़े, बच्चे, जवान, धनिक,
ग़रीब, सब को मरते हुए पाते हैं तो भी
संतोष से बैठना नहीं चाहते हैं, लेकिन
थोड़े दिन जीने के लिये राम को छोड़
सब प्रयत्न करते हैं ।

१-१-४५

कोरा। आशा है कि इतना समझकर
इस राम नाम से दूर करने की बुद्धि आपकी
उनकी भी बदल कर वे और अच्छे आयना
जीवन आदर्श बनाकर कृतार्थ करें।

२-१-४५

कैसा अच्छा हो कि इतना समझ कर
हम राम भरोसे रह कर जो व्याधि
आवे उसकी भी बरदाश्त करें और
अपना जीवन आनंदमय बनाकर व्यतीत
करें !

२-१-'४५

[illegible] महादेवके [illegible] और [illegible]
ही [illegible] वे. यह एक ही बात हुई. इसी
महादेव दर्शनाभी हुं और उसके पुजारीसे इस
उसको पहचान करते हुं और इसमें दक्ष
एकता धारी को इसी करते हुं. किसी को आहत
[illegible] मारना नहीं. सिवा कारण

३-१-४५

शरीरधारी महादेव को शरीर से और
उसके लेखों से ही हम देखते थे । यह
एक ही बात हुई । देहातीत महादेव सर्व-
व्यापी है और उसके गुणों से हम उसको
पहचान सकते हैं और इस में सब एकसा
शरीक हो सकते हैं। किसी को ज़्यादा
कम विभाग नहीं मिल सकता है।

३-१-४५






ગમ્મા ગાંધી મહાત્મા ગાંધીજી
તેમણે કોની દીકરી ગણાતી હતી? એમના
નજીક કોરવો તો મહાત્મા ગાંધીજી કોને
નજીક ગમ્મા. કોમન દુઃખ ગણાય? કુમકુમ?

૪-૨-૫૫

जन्म और मरण शायद एक ही सिक्के
की दो बाजू नहीं हैं ? एक तरफ़ देखो
तो मरण और दूसरी तरफ़ जन्म ।
इस से दुःख क्यों ? हर्ष क्यों ?

४-१-४५

जो जन्म मरण की बात सही होय तो,
और है, तो हम क्यों दुःख सहन करें
दुःखी हों, और सत्कर्म दुःख हो? प्रत्येक
मनुष्य मोक्ष के लिए अपने कार्य करे.

५-१-४५

जो जन्म मरण की बात सही होय, तो और है, तो हम क्यों मृत्यु से ज़रा भी डरें, दुखी हों, और जन्म से ख़ुश हों ? प्रत्येक मनुष्य यह सवाल अपने साथ करे ।

५-१-४५

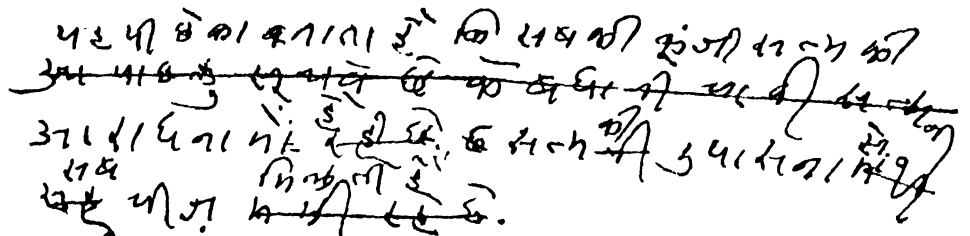


जगत् द्वंद्व से भरपूर है। सुख के पीछे दुःख रहा है दुःख के पीछे सुख छुपा है तो छाया भी है, प्रकाश है तो अंधेरा भी, जन्म है तो मृत्यु भी। इस द्वंद्व से हटने जाने की शक्ति है। द्वंद्व को जीतने का, उपाय द्वंद्व को मिटाना नहीं है, सांसिक द्वंद्वातीत अनासक्त होना है।

६-१-५५

जगत् द्वंद्व से भरपूर है। सुख के पीछे दुःख रहा है, दुःख के पीछे सुख। धूप है तो छाया भी है, प्रकाश है तो अंधेरा भी, जन्म है तो मृत्यु भी। इस द्वंद्व से हटना अनासक्ति है। द्वंद्व को जीतने का उपाय द्वंद्व को मिटाना नहीं है, लेकिन द्वंद्वातीत, अनासक्त होना है।

६-१-४५



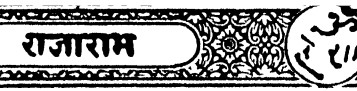
यह पीछे का बताता है कि सब की कूंजी
सत्य की आराधना में है । सत्य की
उपासना से सब चीज़ मिलती है ।

७-१-४५



तब सत्य की आराधना कैसे हो ? सत्य
कौन जानता है ? यहां सापेक्ष सत्य की
बात है । जिसे हम सत्य रूप से देखें
वह सत्य । इतना सत्य भी बहुत कठिन
है ऐसा अनुभव से प्रतीत होगा ।

८-१-४५



जानता हुआ आदमी सत्य कहने से क्यों भीझकता है ? शर्म के मारे ? किसकी शर्म ? ऊपरी है तो क्या ? नौकर है तो क्या ? बात यह है कि आदत आदमी को खा जाती है । हम सोचें और बुरी आदत से छूट जाँय ।

९-१-४५

छूटें नहीं तो सत्यके रास्तेसे पड़ नहीं जा
सकते हैं। बात यह है कि सत्यके लिये
एक कुछ कुरबानी करनी हमें होना होगा।
नहीं चाहते तो, जो किसी हद तक बहुत होगा।
चाहते हैं. कहना आसान है आगे हमनीम
हैं तो नीम होगें. आगे कुछ हमला चाहेंगे
कुछ कामयाब हैं, कुछ नाकामयाब होंगे
तो मनमें नीचे होगें. काई दो ना
तब कुछ नहीं पाओ.

१०-६-५५

छूटें नहीं तो सत्य के रास्ते पर नहीं जा सकते हैं। बात यह है कि सत्य के लिये सब कुछ कुरबान करें। हम हैं ऐसा दीखना नहीं चाहते, लेकिन हैं उससे बेहतर दीखना चाहते हैं। कैसा अच्छा हो अगर हम नीच हैं तो नीच दीखें, अगर ऊंच होना चाहें तो ऊंच काम करें, ऊंच विचारें! ऐसा न हो सके तो भले नीच ही दीखें। कोई रोज़ तब ऊंचे जांयगे।

१०-१-४५

મૌન ગાનુભવ એના કરું, પાનાકું કિ ગાદમી ગાપત્ર
ગરાપ ગાપત્રે દુરાવ દુઃરાવ કો ફાગપા કરું.

22-9-54

जैसे अनुभव लेता हूं, पाता हूं कि
आदमी अपने आप अपने सुख दुःख का
कारण है ।

११-१-४५

ऐसा होने से इस जगह की तेरी क्या दुःखी
क्यों होता है?

27-9-54

ऐसा होते हुए आदमी सुखी दुःखी क्यों
होता है ?

१२-१-४५





बात यह है कि आदमी जैसा वि चार करता
नहीं चाहता वैसा लिखे बोलता है वैसा
वि चार कर कि ऐसा पुरुषार्थ ही नहीं है.
१३-१-४५

बात यह है कि आदमी ऐसे विचार
करना नहीं चाहता। इसलिये मानता है
ऐसे विचार करने की फ़ुरसत ही नहीं है।

१३-१-४५

अगर हम सभी मानव अपनी कथनी
पर चलते हैं तो मानवधिकार अपने
आप कम होंगे और विचार करना
होगा. परिणाम यह होगा कि हमारा
जीवन बहुत सरल हो जायेगा.

१४-१-२५

अगर हम सच्चा जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो मानसिक आलस्य छोड़ कर हमें मौलिक विचार करना होगा। परिणाम यह होगा कि हमारा जीवन बहुत सरल हो जायगा।

१४-१-४५

इरानीने हमें मुसाफिर कहा है बात सच्ची है।
हम यहां तो यह देश के लिये हैं। वहीं
'मरने' की, अपने घर जाने की कैसा आश्चर्य,
अगर सच्चा कहा तो?

१६-२-५६

ज्ञानी ने हमें मुसाफ़िर कहा है। बात सच्ची है। हम यहां तो चंद रोज़ के लिये हैं। बाद में 'मरते' नहीं, अपने घर जाते हैं। कैसा अच्छा और सच्चा ख़्याल !

१५-१-४५

इस तरह मेरा कार्यक्रम परिवर्तन
किया जाने के लिए कोई दो दिन होंगे
आगे है, क्या इस दिन परिवर्तन का
मेरे हिस्से में कार्य क्रम कुछ किया जाने
के और दो दिन बढ़ने चाहिये हैं?

१६-१-४५

हज़ारों मण कचरा बड़े परिश्रम से निकालते हैं तब कोई हीरा हाथों में आता है। क्या हम इस परिश्रम का थोड़ा हिस्सा भी कचरा रूप झूठ निकालने में और हीरा रूप सत्य ढूंढ़ने में देते हैं ?

१६-१-४५

બાપુજીના આશીર્વાદ

બાપુજી પરમધામ પધારે ત્યારે તમારી ઉંમર કેટલી હશે તો આપના દર્શન કેવા હશે?

ક-૧-૫૫

बग़ैर परिश्रम से, यानि बग़ैर तप के,
कुछ भी हो नहीं सकता है, तो आत्म-
शोध कैसे हो सके ?

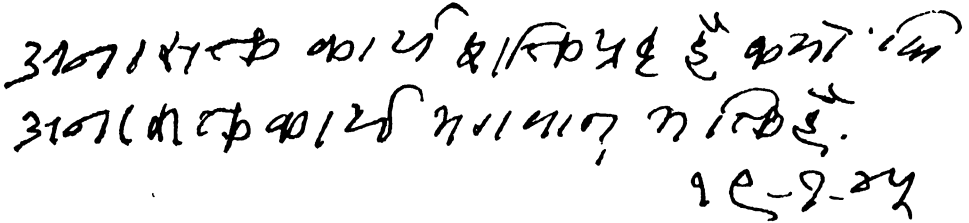
१७-१-४५

अगर सबसमय अहिंसावादी का है तो इस एक
दो आदमी निकम्मी कर्मों जाने दें? अगर इस
अहिंसा को हैं तो हमारे शरीरकी व अहिंसा
भी मौजूद शारीरमें करनी है?

१८-१-४५

अगर सब समय भगवान् का है तो हम
एक क्षण भी निक्कमी क्यों जाने दें ?
अगर हम भगवान् के हैं तो हमारे शरीर
का एक हिस्सा भी मौज शौक में क्यों दें ?

१८-१-४५







अनासक्त कार्य शक्तिप्रद है, क्योंकि
अनासक्त कार्य भगवान् भक्ति है ।

१९-१-४५





ગમદૂર્દ પદુતાને આસપાસીકે ફાર્કિમાની
દુઃખ પાર્ખના ગેગીદું ઉમાર્ં પદુર્દિમા
દું: "દું ભગવાન્ કિમીકા દુઃખ ન દુ
દર્ં કિમતાદું પરનેસેદી દુઃખ આપ
પદુ માગકતે દું."

૨૦-૧-૪૬

जमशेद मेहता ने आसीसी के फ्रान्सिस की एक प्रार्थना भेजी है। उस में यह हिस्सा है : "हे भगवान, किसी को देने से ही हमें मिलता है, मरने से ही हम अमर पद पा सकते हैं।"

२०-१-४५





आपकी आज्ञानुसार

सबको सन्मति दे भगवान

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

ज़मीन का मालिक तो वही है जो उस पर
मेहनत करता है ।

२१-१-४५

ज्ञानयुक्त भक्तमें शक्ति है वह
शक्तिमें अशक्त हो नहीं सकते।

२२-१-५५

जो सचमुच भीतर में स्वच्छ है वह बाहर
में अस्वच्छ हो ही नहीं सकता ।

२२-१-४५

हमारा कार्य कभी निष्फल नहीं होता,
हमारा वचन उसमें कभी उत्तरित नहीं होता.

२६-१-५५

सच्चा कार्य कभी निक्कमा नहीं होता,
सच्चा वचन अंत में कभी अप्रिय नहीं
होता ।

२३-१-४५





[illegible]

[illegible]

[illegible]

शुद्ध हृदय से निकला हुआ वचन कभी
निष्फल नहीं होता ।

२४-१-४५

आत्मकृत्य हमें दुःख होगा तो इस आत्मा में नहीं रहेंगे. ऐसे ही यहीं हमें व्यक्तिगत दुःख होगा तो व्यक्तिगत नहीं पनेंगे, नहीं रहेंगे.

२५-१-४५

आलस्य से हमें दुःख होगा तो हम आलसी नहीं रहेंगे। ऐसे ही यदी हमें व्यभिचार से दुःख होगा तो व्यभिचारी नहीं बनेंगे, नहीं रहेंगे।

२५-१-४५

પ્રાર્થના કરતા આપની સાથે રહેતા, દરમિયાન
કામ પડતો કુટુંબના સભ્યની જેમ, આપ
દરેક પ્રસંગે માર્ગદર્શન આપતા કુટુંબના
વડીલ હતા.

સ્વર્ગારોહણ
૨૬-૧-૯૫

प्रथम काम बाद में मिले तो, दाम
जितना काम। यह तो हुई परमात्मा की
सेवा। अगर दाम पहले मांगोगे तो वह
हुई शेतान की सेवा।

*स्वतंत्रता दिन*
२६-१-४५

કાગળનો જવાબ નહીં આવવાનું કારણ કે
મારું પત્ર પણ વખત પર મારું કર્તવ્ય
કરવાનું મન નહીં તો કવિતા તો કેમ
આવે.

20-9-44

कामना को संतुष्ट नहीं करना अच्छा है ।
लेकिन शुरू करने के बाद उसे रोकना
असंभव नहीं तो कठिन तो है ही ।

२७-१-४५

ગો મનુષ્ય ઉત્પન્ને પરકાજુ નહીં દેવ
દાનવા ૬ વર દુષ્ટો પદ કમ્મ દાદા
કાજુ નહીં દેવ કાળ ગ૨. ૬૮-૧-૪૫

जो मनुष्य अपने पर काबू नहीं रख
सकता है वह दूसरों पर कभी सच्चा
काबू नहीं रख सकता ।

२८-१-४५

अपनेको पहचानने के लिये मनुष्यको अपनेसे बाहर निकल
कर तटस्थ बन कर अपने को देखना है.
२९-१-५५

अपने को पहचानने के लिये मनुष्य को
अपने से बाहर निकल कर तटस्थ बन
कर अपने को देखना है ।

२९-१-४५

जो मनुष्य किसीका भी बोझ हलका करता है वह निष्फल नहीं है.

१०-९-४५

जो मनुष्य किसी का भी बोझ हलका
करता है वह निकम्मा नहीं है ।

३०–१–४५

जिसे हम अच्छी और शुभ मानें वही करने में हमारा सुख है,
हमारी शांति है, न कि जो दूसरे कहें या करें उसे करने में.

३१-१-४५

जिसे हम सही और शुभ मानें वही करने
में हमारा सुख है, हमारी शांति है, नहीं
कि जो दूसरे कहें या करें उसे करने में।

३१-१-४५



पुस्तक वाचन से शान्ति तो आती है लेकिन
शिक्षा ग्रहण से ही सद्बुद्धि आना ही श्रेष्ठ है.

२-२-१५

पुस्त वांचन से शक्ति तो आती है
लेकिन बिना ज्ञान के सही स्वतंत्रता
नहीं मिलती ।

१–२–४५

किसी की नज़र को बिगाड़ो अपनी
आदतों से बचना है। २-२-५५

किसी की मेहरबानी मांगना अपनी
आज़ादी बेचना है ।

२–२–४५

मनुष्यकी प्रतिष्ठा उसके हृदयमें
होती है, जांघकी उसके मस्तकमें
पानी बुद्धिमें।

३-२-५५

मनुष्य की प्रतिष्ठा उस के दिल में--
हृदय में है, नहीं कि उसके मस्तिष्क में,
यानि बुद्धि में ।

३-२-४५

धर्म वह है जो एक कारण कार्य रूप है जाति सब प्रकरणों
एक समय जीवन में आना प्रारंभ है.

१-२-४५

धर्म वह है जो सब धारण करता है,
यानि सब हिस्से में सब समय जीवन में
ओतप्रोत है ।

४-२-४५

ધર્મ કુળ જીવન કે ક્રિયા નહીં હૈ જીવન
હી ધર્મ કાવા ગાય. વગૈરે ધર્મ કા જીવન
મનુષ્ય જીવન નહીં હૈ, વહ પશુ જીવન હૈ.

૫-૨-૪૫

धर्म कुछ जीवन से भिन्न नहीं है, जीवन ही धर्म माना जाय । बग़ैर धर्म का जीवन मनुष्य जीवन नहीं है, वह पशु जीवन है ।

५–२–४५

ગુ. ઝમાદાર કાલ્ચ પાતે હૈં. યા ઝમાદાર કામ કરતે હૈં.
ક્રમાંક કાલ્ચ બોલતે હૈં. દોનોં કામ મિલતે હી
નહીં. દેખો કુદરત સાથ ઝમાદાર કામ કરતી હૈ,
પોલીસ નહીં, લેકિન મરદ હૈં.

દુ-૨-૫૫

जो ज़्यादा काम पाते हैं या ज़्यादा काम
करते हैं, वे कम से कम बोलते हैं। दोनों
साथ मिलते ही नहीं। देखो, कुदरत सब
से ज़्यादा काम करती है, सोती नहीं,
लेकिन मूक है।

६-२-४५

गो दुःखीओंका दुःख दूर करना है वह उनका
दुःख दूर नहीं करेगा, उसको इतना समय कहां है।
७-२-५५

जो दुःखीओं का ही ख़्याल करता है वह
अपना ख़्याल नहीं करेगा, उसको इतना
समय कहां से ?

७–२–४५

जो मनुष्य जो देखना चाहता है वही देखेगा, सुनना चाहता है वही सुनेगा। जैसे माली बग़ीचे में फूल को ही देखेगा, फ़िलसुफ़ को पता भी नहीं लगेगा बग़ीचे में क्या है। बग़ीचे के बाहर है या भीतर उसका भी पता उसे शायद नहीं होगा।

८-२-४५

जिनको काम हमारा मददगार है उनको
अपनी चीजें हरज कर दें और खुशी
मालूम हो-वह तब है कि हमारे को
चाहिये कहे बगैर दे दें तो मजेदार
बनतको मालूम कर दें।

जिन के साथ हमारा सहवास है उनसे
अपनी त्रुटियां देख सकते हैं और सुधार
भी सकते हैं। बेहतर है कि हम रोज़
के व्यवहार को शुद्धतम रखें तो सच्चे
सेवक बनने की आशा रख सकते हैं।

९–२–४५

सत्यके व्रतकी शुद्ध निशानी है जो सत्याग्रही मौनका
सेवन करे. उसके होठोंसे झूठ या दंभ पाखंडकी
बातोंका कुछ बातें करते हैं. वाचाल मनुष्य अनर्थ.
दंभ इत्यादिका जाल बुनें.

२०-२-४५

सत्य के व्रत की शुद्ध निशानी है कि सत्यार्थी मौन का सेवन करे। ऐसे होते हुए भी हम पाते हैं कि बहुत सत्यार्थी बहुत बातें करते हैं। कारण स्पष्ट है—आदत।

हम इस आदत को छोड़ें।

१०-२-४५

मुझे प्रिय लगता है। उसे कोई कष्ट दे, यह मुझे
बिल्कुल अच्छा नहीं लगता है। मैं तो यही
कहता हूँ कि जो कोई उसको कष्ट देता है
उसको मैं एक तरह से मेरा शत्रु ही
समझता हूँ, उसकी कुछ भी प्रवृत्ति अच्छी हो
उसकी तरफ दृष्टि भी न करना चाहिए
ऐसा उसको समझाना चाहिए कि जिससे
फिर वह ऐसा नहीं करे।

१२-२-४५

मृत प्रियजन का स्मरण कैसे करें ? मेरा दृढ़ विश्वास है कि वे मरते नहीं, शरीर मरता है । लेकिन स्मरण तो क़ायम रखना ही है, उनके सब गुण हमारे में यथाशक्ति उतार कर, उनकी शुभ प्रवृत्ति अपनाकर और उसमें वृद्धि कर कर । समाधि पर फूलादि रखना उसी स्मरण को बड़ाने के लिये है । अगर फूलों से ही संतुष्ट रहें तो उसे मैं मूर्ती-पूजा कहुंगा ।

११-२-४५

यह कितनी प्रसन्नता की बात है कि हम सौ के हुए और हमारी कामना पूरी होने की सम्भावना है?

22-2-55

यह कितनी ग़लत बात है कि हम मैले
रहें और दूसरों को साफ़ रहने की
सलाह दें !

१२-२-४५

દુઃખને ઓછું કરવાને બદલે વધારવું એ તો જંગલીપણું
વધુ ઊંડાણમાં દુઃખોનાં કારણો શોધી કાઢવાં એ માનવી
ધર્મ છે એથી માનવો દુઃખોમાં ઘટાડો કરી શકે
પણ ઘટાડવા, કેરવા, મટાડવા?

૧૨-૨-૪૬

दूसरे और हमारे में, सारे जगत् में जो
भेद है वह अंश का या दरजों का ही है,
जाति का कभी नहीं, जैसे एक ही जाति
के वृक्षों में होता है। इस में क्रोध क्या,
द्वेश क्या, भेद क्या ?

१३–२–४५

કોઈ પુણ્ય વિશેષ થી મનુષ્યનો જન્મ થયો છે એવું
વિચાર પૂર્વક વાંચે તો કંઈક કામ લાગે.

28-2-22

कोई शुभ निश्चय भी मनुष्य भले न करे
लेकिन विचार पूर्वक करे तो उसे कभी
न छोड़े ।

१४–२–४५

ગાંધીજીનો રામધૂનનો દોષ કે કોંગ્રેસની
કે નહિ કુનેહની કે ઈર્ષા વહુ કુટુંબનો દોષ કે
દેવની કે કાર્યકરોની વહુ ના એ વિષે કંઈ કહેવાય
પણ એ ન બને કે ન બનવું જોઈએ કંઈ જ!

12-2-48

आदमी को अपने को धोका देने की
शक्ति इतनी है कि वह दूसरों को धोका
देने की शक्ति से बहुत अधिक है। इस
बात का प्रत्यक्ष प्रमाण हरेक समझदार
आदमी है।

१५-२-४५

[illegible] पर होती है उसे दाग लगे पड़े.
पत्थर पर पुताई दाग को छिपे हुए पत्थर से
जाने उसमें क्या करेंगे?

२६-२-५५

जो गुस्सा स्वजन पर होता है उसे रोकने
में जप है। परजन पर गुस्सा रोकने के
लिये हम मजबूर हो जाते हैं। उस में
जप कैसे ?

१६-२-४५

મારા મનની પ્રાર્થના કરવા - કોઈના પ્રેરણા કરવા -
નહીં, પણ કોઈ ન કરે એની ખાતર હું કરું છું એવી
મારા મનમાં ખાત્રી થવા કરવા.

૧૭-૨-૪૫

जीना मानी मौज करना—खाना, पीना,
कूदना—नहीं, लेकिन ईश्वर की स्तुति
करना अर्थात् मानव जाति की सच्ची
सेवा करना ।

१७–२–४५

મનુષ્યજીવન કોઈને પરમાત્મામાં ફનાહ કર્યા છે?
દુનિયા તો ક્ષણિક વિનાશ કરતાં હજારો ગણી
ખુશીઓ તો કરી હતી જ.

मनुष्य जीवन और पशु जीवन में फ़रक
क्या है ? इसका संपूर्ण विचार करने से
हमारी काफ़ी मुसीबतें हल होती हैं ।

१८-२-४५

मनुष्य सब अपनी इच्छसे बोझ लाता है,
इसमें बोझ कम करता है, विचारसे
करता है वह उसकी शक्तिसे ज्यादा है
कृषि ज्यादा करता है। ऐसा सबको
लिखना है, तुलसीदास भी कहते हैं।

१८-२-५५

मनुष्य जब अपनी हद से बाहर जाता
है, हद से बाहर काम करता है, विचार
भी करता है, तब उसे व्याधि हो सकती
है, क्रोध आ सकता है। ऐसी जल्दबाज़ी
निकम्मी है, नुक़सान भी कर सकती है।

१९-२-४५

૩૨૫ પ્રાતઃકાલકો મગનમેં યા ઈશ્વર
ઇધકો કમાનકી અકલ દો, ઇધ અકલકે
ઈંધણકી ચા દુઃખ.

૨૦-૨-૫૫

आज प्रातःकाल के भजन में था ईश्वर
हम को कभी नहीं भूलता, हम भूलते हैं
वही सच्चा दुःख ।

२०-२-४५

ગવર્નરની સભામાં પારસી, પવન
ધનવાન માણસ, ના માનપિતા, ન મોટા દાક્તર!!!
તો શું કામ કામનો માણસ?

21-2-44

जब ईश्वर नहीं बचाना चाहता, तब न
धन बचायेगा, न मातपिता, न बड़ा
डाक्टर !!! तब हमें क्या करना
चाहिये ?

२१-२-४५

हमारे जीवन में एक नहीं की अनेक
ऐसे एक एक परिवार की आवश्यकता है।
तुम एक हो ये कार्य।

२२-२-५५

हमारी गंदगी हमने जब नहीं निकाली है,
तब तक प्रार्थना करने का हमें कुछ हक़
है क्या ?

२२-२-४५

भाभी में उनसे कहा है, वह तुम्हारी भाभी
बराबर की है, ऐसा कहो, लेकिन फेरनेवाली
यह भावना में ही सबसे है ऐसा जानता है तो
उसे फेंक दे; यह भाभी उसको परमात्मा को
नजदीक ले जाती है, उससे कर्म-संन्यास
करती है तो मन से उसे विधि पूर्वक से आँखे
झुकाये.

पत्नि

२३-२-५५

माला लें, उसे संत ने फिराई है, वह तुलसी या सुखड की है, रुद्राक्ष हो, लेकिन फेरनेवाला यदि माला में ही सर्वस्व है ऐसा मानता है तो उसे फेंक दे। यदि माला उसको परमात्मा के नज़दीक ले जाती है, अपने कर्तव्य में सावधान करती है, तो भले उसे विधिवत ले और फिरावे।

वर्धा : २३-२-४५

हम दो लोगों की इच्छा है कि हमारी हम दोनों
की मृत्यु साथ साथ, एक साथ, हो जाय
ऐसा है।

28-2-84

हम हैं क्योंकि ईश्वर है। इसी से हम
देखते हैं कि मनुष्य मात्र, जीव मात्र,
ईश्वर का अंश है।

२४-२-४५

मनमें विचार में एक मत्र विचार हूँ: मेरे लिखने
न लिखने से तू किसी का मत्र दे?
यह विचार पुराने लिखे में है सो परमात्मा के
भगत हूँ।

२५-२-४५

नये करार[1] में एक यह वाक्य है : "तेरे दिल में न चिंता रहे, न तू किसी का भय रखे ।" यह वचन उसके लिये है जो परमात्मा को मानता है ।

२५-२-४५

[1] *The New Testament*

વહી નવા પાવાદ કહતા હૈં કિ અપાર દુઃખ
દર્દ સાલ પર્વ ડાળવા હૈં તો કહ્યું ખંધ
ગાળવા વાવવા જ વધુ દિવસ ગાવા હૈં પરંતુ
વહી કુદરતી કે જિયોને અપને સાથ સામંજસ્ય
બનાવા હૈ.

वही नया करार कहता है कि अगर ईश्वर हमें लालच में डालता है, तो उसमें से बच जाने का रास्ता भी वही बताता है। यह बात सही उन्हीं के लिये है जो अपने आप लालच में फंसते नहीं।

२६-२-४५

નામની મહીમા સિર્ફ તુજ મીટામાંને હી
ગાઈ હૈ ઐસા નહીં હૈ. વાઈક ભી બંધ નહી
માના હૈ. દુનયેમાનકો રૂબરૂ મીલ્કે તે
હૈં ના કોઈ ઈશ્વરકા નામ જોર સે ચુપ
હો ગાં યાર.

27-2-54

नाम की महीमा सिर्फ़ तुलसीदास ने ही
गाई है ऐसा नहीं है । बाईबल में मैं
वही पाता हूँ । दसवें रोमन के १३
कलम में कहते हैं जो कोई ईश्वर का
नाम लेंगे वे मुक्त हो जायंगे ।[1]

२७–२–४५

[1] "For whosoever shall call upon the name of the Lord shall be saved."—*The New Testament* (Romans 10 : 13.)

ગુજરાત છોડયા પછી મને મારા પરિવારનો કોઈ પત્ર લખ્યો નથી. હું મારા પરિવારનો સંપર્ક કરવા ઇચ્છતો નથી એમ નહીં પણ મારી પાસે કોઈનું સરનામું નથી.

૨૮-૨-૪૮

गुनाह छिपा नहीं रहता। वह मनुष्य क
मुख पर लिखा रहता है। उस शास्त्र
को हम पूरे तोर से नहीं जानते, लेकिन
बात साफ़ है।

२८-२-४५

ગાંગા પાસે બાકુલ ગામે પિતાજી પડ્યા
ને આંગણમાં દેવતા કું: મોહનો ગયો કુળ
નુ nivIDI ન મૂકે નિરાંત.'' (મંથી 29.22.)
7-3-47.

आजकल बाईबल के फ़िक्रे पढ़ रहा हूं । आज यह देखता हूं : "श्रद्धा से जो कुछ तुम मांगोगे, तुम्हें मिलेगा।"[1]

(मेथी २१–२२)

१–३–४५

[1] "And all things, whatsoever ye shall ask in prayer, believing, ye shall receive."—*The New Testament* (St. Matthew 21 : 22.)

[illegible] ३४.२८ [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]

'निर्बल के बल राम' के जैसा ही साम ३४–१८ में है। जो टूट गया है उसके नज़दीक परमात्मा है ही, और जिस को सच्चा पश्चात्ताप हुआ है उसे बचा लेता है[1]।

२–३–४५

[1] "The Lord *is* nigh unto them that are of a broken heart; and saveth such as be of a contrite spirit."—*The Old Testament* (Psalm 34: 18)

આજ સાંજના ૪૨-૩૦ મે કસ્તુરબા ફેફસાંની
ક્રોનિક બ્રોન્કાઇટીસ બિમારીથી પીડાતા હતાં.
૨-૨-૪૬

आइलामा ४१–१० में कहता है : डरो
नहीं, क्योंकि परमात्मा तुम्हारे पास
ही है ।[1]

३–३–४५

[1] "Fear thou not ; for I *am* with thee."—*The Old Testament*
(Isaiah 41 : 10)

एक ईश्वर में ही संपूर्ण सृष्टि है. इस कारण ईश्वर
में ही समस्त के लिये विचार करना
इसका नाम भक्ति नहीं: (इशावास्य-मंत्र)
४-३-५



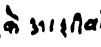


एक ईश्वर में ही संपूर्ण शक्ति है। इसलिये
ईश्वर में ही हमेशा के लिये विश्वास
रखा जाय, इनसान पर कभी नहीं।[1]
(इसाया २६–४ से)

४–३–४५

[1] "Trust ye in the Lord for ever: for in the Lord Jehovah *is* everlasting strength."—*The Old Testament* (Isaiah 26 : 4)





પાની કા સ્વભાવ નીચે જાને કા હૈ.
ઇસી તરહ દુર્બુદ્ધિ નીચે જાતા હૈ
ઇસલિયે મનુષ્ય કો સદા ઊંચી ચઢના ચાહિયે.
સદ્બુદ્ધિ ઉંચે લે જાતા હૈ ઇસલિયે
કુ કે સમાન ત્યાગના હૈ.

૫-૨-૫૫

पानी का स्वभाव नीचे जाने का है ।
इसी तरह दुर्गुण नीचे ले जाता है,
इसलिये सहल होना ही चाहिये । सद्‌गुण
ऊंचे ले जाता है, इसलिये मुश्किल सा
लगता है ।

५–३–४५

मेरी कृपा तेरे लिये काफ़ी होनी चाहिये
क्योंकि मेरा बल दुर्बलता में ही पूर्ण होता है।
(२ कोरि १२-९)

६-३-५५

"मेरी कृपा तेरे लिये काफ़ी होनी चाहिये,
क्योंकि मेरा बल दुर्बलता में ही पूर्ण होता
है ।"[1] (२ कोर : १२–९)

६–३–४५

[1] "My grace is sufficient for thee : for my strength is made perfect in weakness."—*The New Testament* (2 Corinthians 12 : 9)

ईश्वर हमारा उस में है, वही हमारा
बन्धु है और वही उसके सिवा समय में
हमारी दृष्टि फटती है. (सामयिक-१)

१-३-५५

"ईश्वर हमारा आश्रय है, वही हमारा
बल है और वही आपत्ति के समय में
हमारी रक्षा करता है।"[1] (साम ४६-१)

७-३-४५

[1] "God is our refuge and strength, a very present help in trouble."—*The Old Testament* (Psalm 46 : 1)

ईश्वर कौन है? मैं आत्मा को मानता
हूं। मैं सब जगह में हूं, सबमें हूं। इसलिए
हूए भी इस ईश्वर से दूर भागता हूं और विनाश
अधूरी है। इसका मतलब है कि मैं ईश्वर
से अधिकतर कैसे भिन्न हूं।

ईश्वर का क़ौल है : मैं आज हूं, कल था, भविष्य में हूंगा; मैं सब जगह में हूं, सब में हूं। इतना जानते हुए भी हम ईश्वर से दूर भागते हैं और (जो) विनाशी अपूर्ण है उसका सहारा ढूंढते हैं और दुःखी होते हैं। इस से अधिक आश्चर्य किसी में है ?

८-३-४५

पूर्व पश्चिम में नेह न करें. हरकतमें
कहींकी ईंट कहींका रोड़ा भानुमती ने कुनबा जोड़ा
करें. तब ही कुछ काम कर सकते हैं.
९-३-५५

पूर्व पश्चिम में भेद न करें। हरेक वस्तु
कहीं की हो उसकी तुलना गुण दोष पर
करें। तब ही शुद्ध न्याय कर सकते हैं।

९–३–४५



पाप-पुण्य, सुख-दुःख कर्मों के हिसाब से ईश्वर किसी को कुछ देता है. यह नियम है. किसी को भी इसका अपवाद नहीं मिला है. सत्य में पड़ा है. दुःख भी पड़ा है.

२०-६-५५

पाप-पुण्य, सुख-दुःख क्यों ? ईश्वर होते हुए ईश्वर व्यक्ति नहीं है । वह नियम है, नियंता भी । इसका अर्थ हुआ कि मनुष्य कर्म का भोग बनता है । सत्कर्म से चढ़ता है, दुष्कर्म से पड़ता है ।

१०-३-४५

समाजकी सच्ची सेवा यह है कि इससे समाज
मानो दोष मुक्त होने चाहिए. समाजद्वारा
बहुत ही घृणित कहे जाने वाले अन्त्यज
समाज को देखने चाहिए.

२१-३-४५

समाज की सच्ची सेवा यह है जिस से
समाज, यानी सब लोग, ऊंचे चढ़ें । समाज
देख कर ही मनुष्य कह सकता है अमुक
समाज कैसे ऊंचे चढ़े ।

११-३-४५

मनुष्य मानता है कि सब करनेके नजदीक पहुँचता है सिवाय ईश्वर के कोई सहारा नहीं है, तो भी रामनाम लेते हिचकिचाहट होती है. ऐसे क्यों?

22-3-47

मनुष्य जानता है कि जब मरने के
नज़दीक पहुंचता है सिवाय ईश्वर के
कोई सहारा नहीं है, तो भी रामनाम
लेते हिचकिचाहट होती है। ऐसे क्यों ?

१२-३-४५

અરિહંતોએ કાયમી સ્થાન મેળવ્યા પાર્થિવ
દેહ ફરી આવશે: મરજીવા તો રહે, પારલૌકિક
વિમાનો નહીં.

૨૬-૩-૮૫

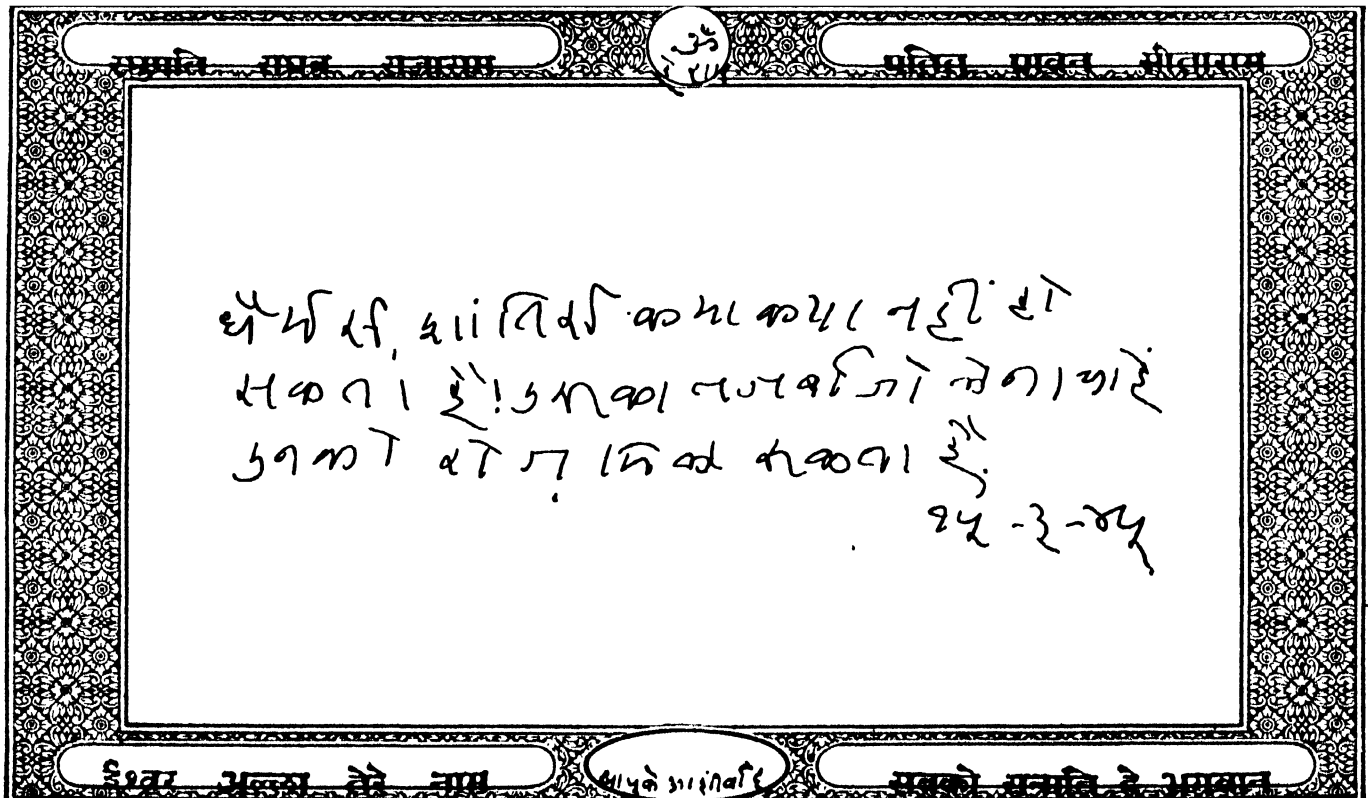
अहिंसा के मार्फ़त स्वतंत्रता पाने का एक
ही मार्ग है : मर कर जीते हैं, मार कर
कभी नहीं ।

१३–३–४५

मन कैसो! आतो हत्या का लक्ष? कशा नाही.
आवडीमुळता पर मरनकी तैयारी हरदम
मन तब गोविंदा रहेको लिये के मरे.
१४-३-४५

मरें कैसे ? आत्महत्या करके ? कभी नहीं । आवश्यकता पर मरने की तैयारी रख कर मरें तब तो ज़िंदा रहने के लिये मरें ।

१४–३–४५



धैर्य से, शांति से क्या नहीं हो सकता है !
उसका तजर्बा जो लेना चाहें उनको रोज़
मिल सकता है ।

१५-३-४५

किसान और मुख मार्ग का संघर्ष दोनों
मनाते हैं। मुख मार्ग के ते हैं
परिणाम दिख पर छोड़ें।

६६-३-८५

क़िस्मत और पुरुषार्थ का झगड़ा रोज़
चलता है। हम पुरुषार्थ करते रहें और
परिणाम ईश्वर पर छोड़ें।

१६-३-४५

किसान पर न दाब डालें, न पुरुषार्थका
भाव का करें. किसान चलती रहती है. इन
देखें कहां दखल हो जाते हैं, होना फिर
होना है, पहिचानना कुछ नहीं है.

१७-३-५५

क़िसमत पर न सब छोड़ें, न पुरुषार्थ
का फांका करें। क़िसमत चलती रहेगी।
हम देखें कहां दख़ल दे सकते हैं, देना
फ़र्ज़ होता है, परिणाम कुछ भी हो।

१७-३-४५

दुःखद बात तो यह है कि हम जानते हैं कैसे करना, लेकिन उसे हम कर नहीं पाते. इसका उत्तर हरेक मनुष्य अपने लिये दे.

१८-३-५५

दुःखद बात तो यह है कि हम जानते
हैं क्या करना, लेकिन उसे हम कर
नहीं पाते । इसका उत्तर हरेक मनुष्य
अपने लिये दें ।

१८-३-४५

પ્રાર્થનાનો અનુભવ લેવાનું કહ્યું એટલે મૌન સ્વીકાર્યું
એમ પડ્યું. આ વાર કોઈ બોલાવી આવે તો કેમ
ન જવાય એવો ભ્રમ રાખવો તે ઠીક નથી.

૧૯-૬-૫૫

प्रतिक्षण अनुभव लेता हूं कि मौन
सर्वोत्तम भाषण है। अगर बोलना ही
चाहिये तो कम से कम बोलो। एक
शब्द से चले तो दो नहीं।

१९-३-४५

छोटी छोटी बातें ही हत्या का कारण बनती
कि कहीं न कहीं आसक्ति है. उसे ढूंढो और
निकालो. बड़ी बातों में हम सीधे पड़ते
हैं इसका भान है. बड़ी बातों में
हम सजग हो जाते हैं. उसका भान सहज
पन का नहीं है.

२०-२-५५

छोटी २ बातें जब हलाक करें तब समझना कि कहां भी आसक्ति है। उसे ढूंढो और निकालो। बड़ी बातों में हम सीधे रहते हैं ऐसा मानना भ्रम है। बड़ी बातों में हम मजबूर होते हैं। उसका नाम सीधापन नहीं है।

२०-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम
आयुष्मान भवेत्
सबको सन्मति दे भगवान

ऐसे मौक़े पर याद रखने का श्लोक यह
है : मात्रा स्पर्ष आते हैं जाते हैं, उसे
सहन करो ।

२१–३–४५



गा कुछ करें, कुछ कहें तो ना कहें। इसका प्रत्युत्तर दर्शन निश्चित होता है। आज दूध फूटा। बाकी तिथि थी। गीता पाराय्यण थी। उसमें कुछ भी दर्शावट नहीं थी।

२२-३-५५

जो कुछ करें, सुव्यवस्थित करें या न करें। इसका प्रत्यक्ष दर्शन नित्य होता है। आज खूब हुआ। बा की तिथि थी। गीता पारायण थी। उस में कुछ भी रस नहीं था।

२२-३-४५

ગાંધી જી. ગાંધી જી ની સિતારેં ગઇ દુકાન કી
બંદ તે હૈ. ગાંધી ગઇ દેખા હૈ તો હૈંદેખ
ફાડકે ગૈરી ફટી હૈ આગે મ પંક
સ્વરુપ ચલી હૈ.

૨૨-૩-૪૫

ग़लती ग़लती मिटती है जब दुरस्ती कर
लेते हैं। ग़लती जब दबा देते हैं, तब
फोड़ा के जैसी फूटती है और भयंकर
स्वरूप लेती है।

२३-३-४५

[illegible]

आत्मा को पहचानने से, उसका ध्यान
धरने से और उसके गुणों का अनुसरण
करने से मनुष्य ऊंचे जाता है । उलटा
करने से नीचे जाता है ।

२४–३–४५

धो पी रिक्शे का है? रोकड़ा पार करते हैं: एक
चुन्नी-धोबनको-गो, गाल है खिजाबे बोतो करके
चुन्नी पर पानी का बुंद गरा-आधार धोये हुए।
आंख नजदीक में एक्सी बढ़ाई है जिस में बुंद
दुरुस्तिन दर्द की कथा। हैंडो कान्त बढ़ाने गाड़ी
दबाती हाथ। यह कवीश्वर पर धोबिन
दृष्टांत है.

२५-२-५५

धैर्य किसे कहें ? शंकराचार्य कहते हैं :
एक सुली—घास की—लो, समुद्र किनारे
बैठो और सुली पर पानी का बुंद लो।
अगर धैर्य होगा और नज़दीक मे ऐसी
खाई है जिस में बुंद सुरक्षित रह सकता
है, तो कालवशात् समुद्र ख़ाली होगा।
यह क़रीब २ पूर्ण धैर्य का दृष्टांत है।

२५–३–४५

जिसको रहना धर्म नहीं है वह उसे हिंसा
पाप न नहीं कहता है. २६-२-४८

जिसको इतना धैर्य नहीं है, वह अहिंसा
पालन नहीं कर सकता है।

२६-३-४५

साप और मनुष्य में क्या फरक? हरएक में
साप पेटके बल चलता है, मनुष्य करोंपर
दो दो हाथका चलता है. लेकिन यह हरेक
है. जो मनुष्य मनसे पेटके बल चलता है
उसका क्या?

२७-३-४५

सांप और मनुष्य में क्या फ़रक ? देखने
में सांप पेट के बल चलता है, मनुष्य
पैरों पर टटार रहकर चलता है ।
लेकिन यह देखाव है । जो मनुष्य मन
से पेट के बल चलता है, उसका क्या ?

२७–३–४५

प्रातिदिन मौनका मनन्तु मैं हरेकता हूं.
इसके लिये मैं उत्साह हूं लेकिन मेरे कामोंमें
इसका दर्शन होना चाहिये तभी मौन सुफल
होगा.

२८-३-४८

प्रतिदिन मौन का महत्त्व मैं देखता हूं ।
सब के लिये अच्छा है, लेकिन जो कामों
में डूबा रहता है उसके लिये तो मौन
सुवर्ण है ।

२८-३-४५

"ઉત્તાવળો સો બહાવરો, ધીરો સો ગંભીર"
પ્રતિકૂળ કરો કાર્ય તો એવો ગણાય.

૨૯-૨-૪૫

"उतावला सो ब्हावरा, धीरा सो
गंभीरा ।" प्रतिक्षण इसका सत्य देखा
जाता है ।

२९–३–४५



नियम का छूट जाना कैसा ख़तरनाक है ! मुंबई आया और रोज़ लिखना छूटा ।

(लिखा : ३–४–४५)

३०–३–४५

વંદે નિત્ય કે દલ મે કાગળ લખીએ.
નિત્ય દલ કુશળ કે ચિઠ્ઠે દેખા કરીએ
સૂર્ય મંડલ મે વારા આવી ચાવી દેખા કરીએ.
લિખવા ૨-૪-૫૫ ૨૧-૩-૫૫

बग़ैर नियम के एक भी काम नहीं बनता।
नियम एक क्षण के लिये टूट जाय, तो
सूर्यमंडल सारा अस्त-व्यस्त हो जायगा।

(लिखा : ३–४–४५)
३१–३–४५

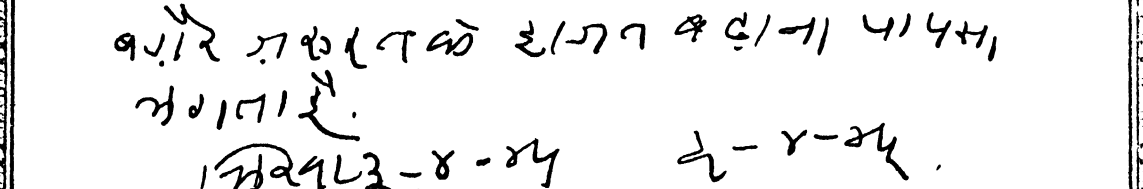
ઇશ્વર અલ્લા તેરે નામ આયુર્વેદ મહાવિદ્યાલય સબકો સન્મતિ દે ભગવાન

यह बात छोटे, मोटे, सब के लिये है ऐसा
सोच कर हम सीखें और चलें, या ज़िंदा
होते हुए भी मरें

(लिखा : ३–४–४५)
१–४–४५







बग़ैर ज़रूरत के हाजत बढ़ाना पापसा
लगता है ।

(लिखा : ३-४-४५)
२-४-४५

आजकल हिन्दी फिल्मों के गानों को
लिखे हुए लोग कम हैं। अगर मेरा मन
मानता तो मैं कवि आजकल की फिल्मों में
अभिनय के लिए कभी
नहीं जाता।

३-४-५५

आज का दिन फांसी वालों, को बचाने
के लिये हड़ताल का है । अगर लोग
मात्र समझ बूझ कर आज का कार्य करें,
तो अहिंसा के मार्ग में हमने बड़ा काम
किया होगा ।

३–४–४५

[1]चिमूर वाले क़ैदियों के तरफ़ इशारा है ।
—सम्पादक

મનુષ્ય માણસ કે કોણ કહેવાય
એ જાણ માણસ કે વહ કહેવાય?
કુરુક્ષેત્ર કોણ કોણ કહેવાય?

૪-૪-૪૫

मनुष्य जानता है क्या करना, लेकिन
जानता है वह करता नहीं । उसका
क्या कारण ?

४-४-४५

आगरा हवा के मानसिक बापुसंदेश के अनुकूल नीचेवाले दो हवा नहीं है चीन के लोगों के बारे में प्रतिदिन बापुसंदेश पढ़ते हैं। इनके लिये पालन करने और अनासक्त रहें।

अगर हम बाहर के मानसिक वायुमंडल के असर नीचे आवें, तो हमारा नाश ही है । चीमूर वाले क़ैदियों के बारे में प्रतिदिन वायुमंडल बदलता ही रहता है। हम कर्तव्य पालन करें और अनासक्त रहें ।

५–४–४५

सी धा बातको भी मनुष्य टेढ़ी मतसे
उसे समझानेवालेसे कितनी मारी मारूंगा
मालूम!

६-४-५५

सीधी बात को भी मनुष्य टेड़ी समझे,
उसे सहन करने में कितनी भारी अहिंसा
चाहिये !

६–४–४५

शरीरको बचाने के लिये बहुत कुछ करना
है आत्माको बचाने के लिये कुछ
करना चाहिये।

७-४-५५





शरीर को बचाने के लिये बहुत उद्यम
करता हूँ, आत्मा को पहचानने के लिये
इतना करता हूँ क्या ?

७–४–४५





ગીરધર મુરલિયો મોરલો વગાડતાં રોતાં હસતાં,
રહસવતાં. મહારાજ કોણ કોણ, ધીરજ રાખજો,
ગીરધર મુરલિયો વગાડતો એક મારો ધર્મનો ઈશ્વર?

૮-૪-૫૫

ग़ैर-समझ से मैं गुस्सा करता हूं, रोता
हूं, हंसता हूं, रहम खाता हूं । यह सब
छोड़ कर, धीरज रख कर, ग़ैर-समझ
मिटाना ही एक मेरा धर्म नहीं है क्या ?

८–४–४५

इस बात को मानें? इसकी तारीफ, इसकी निंदा? इनको ध्यान में रखकर हम क्या करें? इसमें भी तो काफी ध्यान की पार्ट आती है. इस तरह हमें तो कुछ विचित्र ही लगता है, तो कुछ कहना नहीं है. अच्छा तो यह है कि इस अपने काम में कुछ सोचना ही नहीं चाहिए. जैसे हम देखते हैं, ज्ञानियों जैसे मालूम होते कुछ फालतू ही पड़े रहते. हमारा धर्म पालन ही करना है.

९-४-५५

हम क्या मानें ? हमारी तारीफ़, हमारी निंदा ? दोनों ग़लत हो सकते हैं। तब हमारा इनसाफ़ हम ही करें ? इस में भी तो काफ़ी ग़लती पाई जाती है। हम कैसे हैं सो तो ईश्वर ही जानता है, लेकिन वह तो हमें कहता नहीं है। अच्छा तो यह है कि हम अपने बारे में कुछ जाने नहीं, माने नहीं। जैसे हैं वैसे हैं। जानने से और मानने से हमें कुछ फ़ायदा नहीं पहोंचता। हमारा धर्म पालन ही सच्ची बात है।

९-४-४५

अंधा वह नहीं जिसकी आंख फूट गई है।
अंधा वह है जो अपने होश खो बैठा है।
१०-४-५५

अंधा वह नहीं जिसकी आंख फुट गई है।
अंधा वह है जो अपने दोष ढांकता है।

१०–४–४५

मनुष्य की शांति की कामना तो सभी
ही रख रही है, हिंसा से की जा रही है।
२१-४-५५

मनुष्य की शांति की कसौटी समाज में
ही हो सकती है, हिमालय की टोच पर
नहीं ।

११-४-४५

ગાદલું એક વધારું છે. ઓઢવાનો પાતળો બિછાવવા
કામળી વધારું છે.

લિ. ૧૫-૨-૫૫ ૨૨-૨-૫૫

आदर्श एक वस्तु है, उसका पालन
बिलकुल दूसरी वस्तु है ।

(लिखा : १५-४-४५)
१२-४-४५

सिवाय उपरोक्त मनुष्य कुटुम्ब दर्शन नहीं होंगे.

लि. सेवा १५-४-४५ १३-४-४५

सिवाय आदर्श के मनुष्य सुखान रहित
जहाज़ के जैसा है ।

(लिखा : १५–४–४५)
१३–४–४५





मरे पास अाई है ऐसा तब ही कहा जाय
जब मैं उस पहुंचने की कोशिश
करूंगा।
[illegible] 28-2-45

मेरे पास आदर्श है, ऐसे तब ही कहा जाय
जब मैं उसे पहुंचने की कोशिश करता हूँ।

(लिखा : १५–४–४५)
१४–४–४५

इस कॉपी में संतुष्ट रहें व धार्मिक कॉपी
सही और पक्का धार्मिक हो. परिणाम सिर्फ कॉपी
पर निर्भर नहीं रहता. और चीज़ें होती हैं जिस
पर हमारा कोई अंकुश का नहीं होगा.
१२-४-५८





हम कोशिश से संतुष्ट रहें, बशर्तेकि
कोशिश सही और यथाशक्ति हो ।
परिणाम सिर्फ़ कोशिश पर निर्भर नहीं
रहता । और चीज़ें होती हैं जिस पर
हमारा कोई अंकुश नहीं होता ।

१५–४–४५





ગઈ કાર્તિકી કોને કહે? એક બાત યહ હૈ કિ
ગઈ કોર્તિકી કી અમુક તક હમેં ઇચ્છિત ફલ મિલતા
હૈ. ઇસ લિયે ફલ સે હી કહા જાતા હૈ કોર્તિકી ગઈ
થી. લેકિન અનુભવ સે માલુમ હોતા હૈ ઐસે હોતા
નહીં કહતા. ગઈ કોર્તિકી યહ હૈ કિ ઇસકી
પ્રાપ્તિ કા કારણ નિષ્ફલ હૈ અૌર વિપરીત ફલ
દેનેવાલે પરમેશ્વર સાધન બદલને કા નહીં. ઇસલિયે
કહતે હૈં યા કામ હોતા હૈ.

ઇતિ - ૪-૧૧

सही कोशिश किसे कहें ? एक बात यह है कि सही कोशिश से बहुत वक्त हमें इच्छित फल मिलता है । इसलिये फल से ही कहा जाता है कोशिश सही थी । लेकिन अनुभव से मालूम होता है ऐसे हमेशा नहीं बनता । सही कोशिश यह है कि साधन की योग्यता के बारे में निश्चय है और विपरीत फल देखने पर भी साधन बदलता नहीं, न उद्यम बदलता है या कम होता है ।

१६-४-४५

मुझमें इतनी शक्ति कहाँ से है? शिवजी से मनुष्य जन्मकी
सब शक्ति व ऐसे संकोचको दूर करवाते हैं। इसी
सुमधुरता में सफलता का प्रायः हो जाती है।

यथाशक्ति किसे कहें ? जिससे मनुष्य
अपनी सब शक्ति बग़ैर संकोच के ख़र्च
करता है । ऐसे शुभ प्रयत्न में सफलता
प्रायः होती है ।

१७–४–४५

મનુષ્ય જીવનમાં નિર્ણય મહિલાના પ્રમાણપત્રો આધારિત
ઘરમાં કામ કરતાં કરતાં ઉપર ચઢતા જાય. એવી
માન્યતા છે કે જ્યારે કોઈ પરિવારમાં કોઈ
નિર્ણય બદલવા માટે ઘરના પરિવારની બહેનો
નારાજ થવા. નિર્ણય કરવામાં ધર્મ બતાવે
તો પરીક્ષા પછી ઘરમાં નિર્ણય બદલવા
ઓર નિર્ણય ન આપવા જોઈએ.

૧૮-૪-૨૦૧૮

मनुष्य अपने निर्णय नहिंवत् प्रमाण को आचारभूत करके करता है और उसी पर चलता है । ऐसी हालत में अच्छा है कि जहां तक बन सके कुछ निर्णय करना नहीं और परिणाम के बारे में तटस्थ रहना । निर्णय करने का धर्म बन जाता है, तब पूरी सावधानी रख कर ही निर्णय करना और निडरता से अमल करना ।

१८–४–४५

अमेरिका में हरी मिर्च बहुत छोटी लगती है और
मुझे गलगौवरी साइज़ मिर्च बहुत का इतना ही
लगता है जैसा भारत का.

१९-४-५८

असंगत ऐसी मोटी वस्तु छोटी लगती
है, और सुसंगत जैसी सब से छोटी वस्तु
का इतना ही स्थान है जैसा मोटी का।

१९-४-'८५

# परिशिष्ट

## १

वृक्षन् से मत ले, मन तू वृक्षन् से मत ले ।
काटे वाको क्रोध न करही,
सींचे न करहि स्नेह ... वृक्ष०
धूप सहत अपने शिर ऊपर,
और को छांह करेत ।
जो वाही को पत्थर चलाय,
ताहि को फल देत ... वृक्ष०
धन्य धन्य अे परोपकारी,
वृथा मनुष्य की देह ।
सूरदास प्रभु कहें लग वरनौ,
हरिजन की मत ले ... वृक्ष०

## २

अब हौं कासों बैर करौं ?
कहत पुकारत प्रभु निज मुख ते ।
"घट घट हौं बिहरौं" ॥ध्रु०॥
आपु समान सबै जग लेखौं ।
भक्तन अधिक डरौं ॥
श्रीहरीदास कृपा ते हरि की ।
नित निर्भय विचरौं ॥१॥

## बहारे बाग दुनिया

है बहारे बाग दुनिया चंद रोज़ !
देख लो इसका तमाशा चंद रोज़ ॥
ऐ मुसाफ़िर ! कूच का सामान कर।
इस जहाँ में है बसेरा चंद रोज़ ॥
पूछा नुकमाँ से : "ज़िया तू कितने रोज़ ?"
दस्त हसरत मलके बोला: "चंद रोज़" ॥
बाद मदफन कबर में बोला नकीर।
"अब यहीपे सोते रहना चंद रोज़" ॥
फिर तुम कहां औ' मैं कहां, ऐ दोस्तो !
साथ है मेरा तुम्हारा चंद रोज़ ॥
क्यों सताते हो दिले बेतुम को।
जालिमो ! है यह ज़माना चंद रोज़ ॥
याद कर तू ऐ **नज़ीर** कबरों के रोज़।
ज़िन्दगी का है भरोसा चंद रोज़ ॥

जन्म — मृत्यु

२ अक्तूबर १८५९ : ३० जनवरी १९४८

## नाम जपन

नाम जपन क्यों छोड़ दिया ?
क्रोध न छोड़ा, झूठ न छोड़ा,
सत्यवचन क्यों छोड़ दिया ? ॥ ध्रु० ॥
झूठे जग में दिल ललचाकर,
अमल वतन क्यों छोड़ दिया ?
कौड़ी को तो खूब सम्हाला,
लाल रतन क्यों छोड़ दिया ? ॥ १ ॥
जिहि सुमिरत ते अति सुख पावे,
सो सुमिरन क्यों छोड़ दिया ?
खालस इक भगवान भरोसे,
तन, मन, धन क्यों न छोड़ दिया ? ॥ २ ॥